वर्ष 24 | अंक 8 | मार्च , 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

प्रसन्नता संक्रामक होती है, यानी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फ़ैलती है। एक अध्ययन के अनुसार, हम खुश रहने वाले अन्य लोगों के आस–पास रहकर खुशी महसूस करते हैं। अगर कोई खुश है, तो वह हमें खुश कर सकता है और बदले में हम किसी और को खुश कर सकते हैं।

खुश रहना हमें अच्छा अनुभव तो देता ही है, यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। विशेष रूप से, खुशी हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है। एक शोध में पाया गया कि जो सदा प्रसन्न रहते हैं, उनमें सामान्यतः सर्दी–जुकाम होने की सम्भावना कम होती है।

यदि आप खुश रहते हैं तो दर्द से बच सकते हैं। सन 2005 में हुए एक शोध में गठिया और पुराने दर्द से पीड़ित व्यक्तियों को देखा गया। अध्ययन के अनुसार, जिन लोगों ने अधिक सकारात्मक भावनाओं जैसे– खुशी, उत्साह आदि का अनुभव किया, उन्हें दर्द का अनुभव कम हुआ।

खुश रहने का सबसे अच्छा तरीका है, दूसरों को खुशी देना। एक अध्ययन के अनुसार भलाई के कार्य करना, जरूरतमंदों की मदद करना और दान देने जैसे कार्य खुद को खुशी देने के सबसे प्रभावी तरीके हैं। ऐसा करने से हमारा मस्तिष्क और भी अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित होता है।

शोधकर्ताओं के एक अध्ययन के अनुसार, जो लोग फूलों की सुगंध के सम्पर्क में आते हैं, उनके खुश होने की सम्भावना लगभग तीन गुना अधिक होती है। प्रकृति, और खास कर फूलों के पास रहना आपके मूड को अच्छा करने का एक आसान तरीका हो सकता है।

अन्तरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस

20 मार्च

कहाँ क्या?

आलेख

डॉ. राम मनोहर लोहिया	: सुरेश बाबू मिश्रा	– 11
विश्व कविता दिवस	: त्रिलोकी मोहन पुरोहित	– 26
दुनिया का सबसे बड़ा ताला	: किरण बाला	– 22
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
मनुष्यों जैसा होता है : गोरिल्ला	: डॉ. अनुभा गुप्ता	– 37
अंडर 19 महिला क्रिकेट विश्वकप	: अनिल जायसवाल	– 38

कहानी

कसर रह गई थोड़ी	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
हनी–बनी तितलियाँ	: श्रीमती रजनी शर्मा	– 09
मटकू की कुश्ती	: पवन कुमार वर्मा	– 15
पानी की कहानी	: उमेश कुमार चौरसिया	– 19
बच्चों की कुर्बानी	: डॉ. कुसुम रानी नैथानी	– 23
मीकू की शैतानी	: शील कौशिक	– 31
मस्ती की पाठशाला	: अनीता गंगाधार शर्मा	– 35
होली की गुझिया	: हरीश कुमार 'अमित'	– 39
मम्मी झूठ नहीं बोलती	: शराफत अली खान	– 47

कविता-गीत

खेल दिखाने वाला	: रेखा लोढ़ा 'स्मित'	– 06
फिर आई है होली	: बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान	– 10
आओ! गौरैया	: सत्यशील राम त्रिपाठी	– 10
कौआ पक्षी	: गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'	– 10
परमवीर संजय कुमार	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
मम्मी मैं भी बड़ी हो गई	: प्रभुदयाल श्रीवास्तव	– 18
मुन्नू की पीड़ा	: सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'	– 18
सुबह हुई	: डॉ. अलका अग्रवाल	– 30
सूरज से सीखा	: नलिन खोईवाल	– 36

विविधा

दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 13
विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 14
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17
बूझो तो जानें	: गौरीशंकर वैश्य विनम्र	– 25
चित्र पहेली	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 40
Meet the Birds	:	– 46

स्तम्भ

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 28, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–33, व्हाट्सएप कहानी–33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 48, बच्चों का क्लब – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 8 मार्च, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

अध्यक्ष | अविनाश नाहर
महामन्त्री | भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया
प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

अपूर्वा अपनी पढ़ाई को लेकर बहुत सचेत रहती थी। समय पर होमवर्क पूरा न हो तो वह बेचैन हो जाती थी। उसने पढ़ने, खेलने, घर के काम में मम्मी को मदद करने, अपने कपड़े धोने या प्रेस करने, पढ़ाई के अलावा पुस्तकें पढ़ने, टीवी या यूट्यूब पर प्रोग्राम देखने जैसे अलग-अलग कामों के लिए समय और दिन निश्चित कर रखे थे।

अपूर्वा आठवीं कक्षा की छात्रा थी और स्कूल में उसका नाम प्रतिभाशाली बच्चों में आता था। परीक्षाएँ नजदीक आते देख एक दिन वह अपनी मम्मी से बोली- ''माँ, सोच रही हूँ कि पढ़ने का समय बढ़ा दूँ। पिछली बार भी क्लास में फर्स्ट आने से चूक गई थी।''

अपूर्वा के माथे पर चिन्ता की लकीरें देख मम्मी बोली- ''बेटी, तुझे लगता है कि तेरी तैयारी कम है तो थोड़ी ज्यादा पढ़ लिया कर। कहे तो ट्यूशन लगवा दूँ। लेकिन तुम्हारे चेहरे पर फर्स्ट आने का टेंशन मुझे नहीं चाहिए।''

अपूर्वा बोली- ''माँ, बस दो नम्बर से रह गई थी।'' मम्मी आज बेटी को इस तनाव से बाहर निकालना चाहती थी- ''तुम फर्स्ट आओगी तो मुझे भी खुशी होगी। लेकिन सेकेंड आना भी कोई कम बात थोड़े ही है! बल्कि तुम जैसी बच्ची जो इतनी समझदार है, समय पर सब काम करती है और बड़े-छोटों सबको आदर देती है, वो यदि फर्स्ट सेकेंड कुछ भी न आए तब भी मुझे बुरा नहीं लगेगा।''

मम्मी की बातें सुन कर अपूर्वा उनसे लिपट गई। उसकी आँखें गीली हो गई थी। मम्मी बोली- ''अपूर्वा, तुम्हें पता है? तुम्हारे पापा ने पढ़ाई में कभी बड़ा स्थान नहीं पाया लेकिन एक अच्छे इनसान बनकर उन्होंने सबसे इज्जत पाई। जो पढ़ा वो मन से पढ़ा, इसीलिए इतने बड़े वैज्ञानिक बने। मैं और पापा दोनों चाहते हैं कि तुम बिना किसी तनाव के मन से पढ़ो और रिजल्ट की परवाह मत करो।''

अपूर्वा खुद को बहुत हल्का अनुभव कर रही थी। परीक्षा का टेंशन उसके मन से निकल गया था। उसने सोच लिया था कि पढ़ाई में कोई कमी नहीं आने दूँगी लेकिन हमेशा अपने आप को अच्छा इनसान बनाने की कोशिश जारी रखूँगी।

बच्चो, अपूर्वा सही रास्ते पर थी क्योंकि पढ़ाई बहुत ज़रूरी है लेकिन वह तभी उपयोगी है जब जीवन में अच्छी आदतें और अच्छे संस्कार हों। आपको भी इसी रास्ते पर चलना है।

रंग-उमंग के पर्व होली की शुभकामनाएँ।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

अपने को अच्छा बनाओ

एक दिन एक राजा के पैर में काँटा चुभ गया। बहुत पीड़ा हुई। उसने सोचा– ''जैसे मेरे पैर में काँटा चुभा, वैसे औरों को भी चुभता होगा। चिन्तन में डुबकी लगाते–लगाते उसने मन्त्री को बुलाया। वह उपस्थित हुआ। राजा ने कहा– ''मन्त्री! मेरे आदेश का पालन करो और समूचे राज्य में चमड़ा मढ़ा दो जिससे किसी के पैर में काँटा न चुभे।'' मन्त्री ने मुस्कुराते हुए कहा– ''यह असम्भव है, महाराज! सब लोग अपने–अपने पैरों में चमड़ा पहन लें, तो समस्या हल हो जाएगी।

गर्मी के दिन थे। दोपहरी की वेला थी। चिलचिलाती धूप थी। सूर्य अग्नि फेंक रहा था। राजा को बाहर जाना पड़ा। उसे बहुत कष्ट हुआ। उसने सोचा– ''औरों को भी होता होगा। कितना अच्छा हो मैं समूचे आकाश को वस्त्र से आच्छादित करा दूँ।'' राजा ने मन्त्री को बुलाकर कहा– ''मेरी आज्ञा का पालन करो और पूरे आकाश में चंदोवा तान दो जिससे किसी को धूप न लगे।'' मन्त्री ने मुस्कुराते हुए कहा– ''यह असम्भव है, महाराज! सब लोग अपने–अपने सिर पर छाता रख लें, चंदोवा अपने आप तन जाएगा।''

कथाबोध : हर आदमी अपने को अच्छा बनाने की बात सोचे और वह वैसा बने तो दुनिया अपने आप अच्छी बन जाए।

पद्य कथा

खेल दिखाने वाला

आज स्कूल में आया कोई
खेल दिखाने वाला,
दिखा रूप उसका अलबेला
लगता बड़ा निराला।

पेटी लाया झोला लाया
और साथ में धागे,
सारे बच्चे खेल छोड़कर
आए भागे–भागे।

मूँछों वाले भैया जी ने
खोल दिया था ताला,
आज स्कूल में आया कोई
खेल दिखाने वाला।

पेटी में से निकली दुल्हन
दूल्हा साफा बाँधे,
पंडित जी भी बाहर आए
गमछा डाले काँधे।

सेठानी भी बाहर आई
आया मोटा लाला,
आज स्कूल में आया कोई
खेल दिखाने वाला।

पंक्ति बनाकर बैठे बच्चे
खेल हुआ फिर चालू,
पहले पहले आगे आए
हाथी घोड़ा भालू।

शेर दहाड़ा जरा जोर से
सर्प दिखा फिर काला,
आज स्कूल में आया कोई
खेल दिखाने वाला।

सजा तभी शादी का मंडप
बजी वहाँ शहनाई,
सजी धजी दुल्हन ने
माला दूल्हे को पहनाई।

कठपुतली का नाच देखकर
झूमा मन मतवाला,
आज स्कूल में आया कोई
खेल दिखाने वाला।

रेखा लोढ़ा 'स्मित'
भीलवाड़ा (राजस्थान)

साहसी बच्चे

कसर रह गई थोड़ी

केरल की राजधानी तिरुअनन्तपुरम से तीस किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में कुट्टिचल नाम का एक सुव्यवस्थित गाँव है। रजेना हाउस नामक मकान के बाहर उस समय दो बच्चे खेल रहे थे। उनमें एक नौ साल का रमसीना आर.एम. था जबकि दूसरी रिजाना उसकी मौसेरी बहन थी और वह उस समय तीन साल की थी। जहाँ वे इस समय खेल रही थीं, वहाँ से मुख्य सड़क की दूरी करीब बीस मीटर थी।

नन्ही रिजाना बड़ी बहन के साथ निश्चिन्त होकर खेल रही थी। भोली भाली रमसीना भी बड़े प्रेम से उसके साथ खेल रही थी। सामने दूर सड़क पर जाते हुए वाहनों के हॉर्न की आवाज कभी–कभी उनके ध्यान को भंग कर देती थी। तभी यकायक सड़क की ओर से एक कार अपना रास्ता बदल कर उनकी ओर आने लगी। जिसकी गति अनियंत्रित थी। जिस स्थान पर वे दोनों खेल रही थीं, वह कार उसी ओर आ रही थी।

कार की चाल लड़खड़ा रही थी और उसके सीधे निशाने पर रिजाना थी। जो उस समय उस संकट से बेफिक्र थी। उस समय रमसीना कुछ सुरक्षित स्थान पर थी लेकिन जैसे ही उसे इस बात का आभास हुआ कि रिजाना की जान खतरे में है। वह तुरन्त अपना स्थान छोड़कर रिजाना की ओर दौड़ी। इस बीच तेजी से आती वह कार काफी करीब आ चुकी थी।

रमसीना ने बेहद फुर्ती दिखाते हुए रिजाना को अपनी गोद में उठाया और कार की टक्कर में आने से पहले रिजाना को लेकर बचने के लिए छलाँग लगा दी। रिजाना को लेकर वह आगे गिरी। कार उससे कुछ ही दूरी से होकर गुजर गई थी। अचानक वह दर्द से चीख उठी। अपने हौसले और समझ से वह रिजाना के साथ कार की पहुँच से बाहर आ चुकी थी मगर दुर्भाग्य से कार के सामने रिजाना को बचाने के लिए कूदने से ड्राइवर से स्टेयरिंग थोड़ा घूम गया और कार उसके बाएँ पैर को कुचलती हुई उसके ऊपर से निकल गई।

रिजाना को तो खरोंच भी नहीं आई मगर रमसीना दर्द से चीख पड़ी। जिसे सुनकर घर से लोग निकलकर आए, आनन फानन में उसे अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने बहुत कोशिश की मगर वे रमसीना के पैर को न बचा सके। मजबूरन उन्हें घुटने के नीचे से रमसीना के पैर को काटना पड़ा। रमसीना को अपने पैर के कट जाने का तो बहुत दुःख था मगर उसे खुशी थी कि उसने अपने इस प्रयास में नन्ही रिजाना की जान बचा ली थी। काश! जरा सी तेजी वह और दिखा पाती तो उसका बायाँ पैर भी बच सकता था।

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

मधुर व्यवहार

मधुर व्यवहार सबको अच्छा लगता है। यदि कोई हमसे कटु व्यवहार करे तो हमें भी अच्छा नहीं लगेगा। हम जैसे व्यवहार की दूसरों से अपेक्षा करते हैं, हमें भी दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। मृदु व्यवहार वाले बालक की सभी प्रशंसा करते हैं। मधुर वाणी बोलने वाला बालक सभी से प्रेम, आदर और स्नेह प्राप्त करता है।

अपना स्वभाव मृदुल बनाने का आपको अभी से प्रयास करना चाहिए। घर पर आने वाले मेहमानों को खड़े होकर प्रणाम अथवा नमस्कार करें। उन्हें विनम्रतापूर्वक बैठने का आसन दें। यदि घर पर कोई अनजान व्यक्ति आए तो उनसे मधुर स्वर में पूछें– ''आप कहाँ से पधारे हैं?''

मेहमानों तथा अपने आस–पास रहने वाले सभी लोगों से मधुर वाणी में बात करें। बड़े लोगों के लिए 'श्रीमान', 'आदरणीय' आदि शब्दों का प्रयोग करें। बातचीत में 'जी' शब्द का प्रयोग करें।

एक कथा से समझें – किसी गाँव में एक जागीरदार रहता था। वह गाँव के किसी भी कार्यक्रम, भोज अथवा विवाह आदि उत्सवों में सदा घोड़े पर बैठकर जाता। वहाँ पहुँचकर भी वह घोड़े पर बैठे–बैठे ही लोगों से कठोर भाषा में पूछता– ''क्यों, सब ठीक तो है ना?''

गाँव के लोग उसे 'घमंडी जागीरदार' कहते और सोचते कि इसका घमंड कैसे दूर किया जाए? वे इसके लिए मौके का इन्तजार कर रहे थे। कुछ समय बाद जागीरदार के बेटे का विवाह पड़ोस के गाँव की लड़की से तय हुआ। उसने गाँव के सभी लोगों को बारात व भोजन के लिए आमन्त्रित किया। गाँव के लोगों ने सोचा– जागीरदार को सबक सिखाने का यही सही मौका है। सब लोगों ने किराये पर घोड़े लिये और उन पर बैठकर जागीरदार के यहाँ पहुँचे। गाँव वालों द्वारा भोजन आदि के प्रबंध में कोई सहयोग नहीं दिए जाने के कारण जागीरदार के यहाँ भोजन का प्रबंध नहीं हो सका, इस कारण जागीरदार उदास

बैठा था। इतने में उसने गाँव वालों को घोड़ों पर आते देखा। वे सभी घोड़ों पर बैठे–बैठे ही घर के लोगों और नौकरों से पूछने लगे– ''क्यों सब ठीक तो है न! भोजन तैयार हो गया, क्या?''

जागीरदार को अपने व्यवहार का स्मरण हो आया। उसने सभी लोगों से क्षमा माँगी। उसके विनम्र भाव से क्षमा माँगने पर गाँव वाले अपने–अपने घोड़ों से उतर गए। सबने सहयोग करके जागीरदार के पुत्र के विवाह कार्यक्रम को सफल बनाया। हमें भी अपने सहपाठियों, घर–परिवार के सदस्यों, गुरुजनों और पास–पड़ोस में रहने वाले लोगों से विनम्र व्यवहार करना चाहिए। विनम्रता और मृदुल व्यवहार से बिगड़े हुए काम भी सुधर जाते हैं।

मृदुता की अनुप्रेक्षा

महाप्राण ध्वनि का अभ्यास करें। कायोत्सर्ग का अभ्यास करें। गहरा श्वास लें। अनुभव करें कि चारों ओर हरे रंग के परमाणु फैले हुए हैं जो श्वास के साथ शरीर में प्रवेश कर रहे हैं। शान्ति केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें। मृदुता का भाव पुष्ट हो रहा है। अहं का भाव क्षीण हो रहा है। महाप्राण ध्वनि के अभ्यास के साथ समाप्त करें। इस प्रयोग को नियमित करने पर व्यवहार में मधुरता आती है।

हनी-बनी तितलियाँ

दोनों तितलियाँ साथ–साथ ही उड़ती थी। कभी बाग में, कभी पहाड़ में, कभी जंगल में। जाने कहाँ–कहाँ की सैर वह साथ ही किया करती थी। उनमें से एक का नाम था हनी तो दूसरे का नाम था बनी। दोनों के पंखों में नीले, पीले, सुनहरे मोरपंखिया रंग के टप्पे थे। जैसे ही उनके पंखों पर धूप पड़ती ये चमक उठती। यह कोई साधारण तितलियाँ नहीं थी। वे तो घने जंगलों के भीतर तक जाती और खास प्रकार के वनस्पतियों व फूलों से रस पीती थी।

आज हनी ने बनी से कहा– ''चलो ना आज बस्तर के घने जंगलों में चलते हैं। वहाँ तो एक से बढ़कर एक दुर्लभ वनस्पतियाँ पाई जाती हैं।'' फिर क्या था! दोनों अपने पंखों को फैलाकर उड़ चली अब बस्तर का वह जंगल उन्हें बहुत रास आने लगा था। कभी हनी तितली आवाज देकर कहती– ''बनी! देखो यह वनस्पति कितनी सुगंध बिखेर रही है।'' तो कभी बनी कहती– ''देखो! हनी इस वनस्पति से कैसा सुगंधित द्रव निकल रहा है?''

उन जंगलों में एक बच्चा रोज अपने बाबा के साथ आया करता था। न जाने उसके बाबा उस जंगल में कौन सी जड़ी–बूटी ढूँढ़ा करते थे। इस बीच वह बच्चा खेलते–कूदते अपना समय व्यतीत करता था। अचानक हनी और बनी तितली को देखकर वह खुशी से उछल पड़ा। उसने वनस्पतियों के ऊपर बैठी तितलियों को दिखाने के लिए अपने बाबा को आवाज दी। बाबा ने वहाँ आकर देखा तो देखते ही आश्चर्यचकित हो गये। यही तो है दुर्लभ वनस्पतियाँ! बाबा ने बच्चे से कहा– ''तुम्हें पता है, यही दुर्लभ तितलियाँ दुर्लभ वनस्पतियों का पता भी बताती हैं और हम तितली वैज्ञानिक इनके आधार पर दुर्लभ वनस्पति खोज पाते हैं।

अब तो गप्पू, हनी, बनी की दोस्ती हो चुकी थी। वह हनी बनी को कभी भी पकड़ने की कोशिश नहीं करता था। तितलियाँ भी बेफिक्री से गप्पू के साथ खेला करती थी और बाबा दुर्लभ वनस्पतियों की पहचान किया करते थे। जिन पर यह दुर्लभ तितलियाँ बैठा करती थी। उनकी पहचान करके उसको एकत्रित करते थे। क्योंकि उसके बाबा एक तितली वैज्ञानिक थे। एक तरह से बाबा अपना काम किया करते थे।

पर आज हनी–बनी जंगल से शहर की सीमा के पास उड़ते–उड़ते अनजाने ही आ गई थी। यह क्या? बड़े–बड़े मोबाइल टावर वाले क्षेत्र में हनी बनी ने अनजाने इन रेडियो तरंगों वाली मोबाइल टावर की सीमा में प्रवेश किया था। अचानक रेडियो विकिरण से हनी बनी को अपने पंखों के जलने का एहसास हुआ। वे मूर्छित होकर गिर पड़ीं। गप्पू हैरान–परेशान! उसने दौड़ कर अपने बाबा को बुलाया।

बाबा ने बड़ी सावधानी से हनी–बनी को उठाकर उस मोबाइल टावर से दूर जंगलों के भीतर ले जाकर उपचार किया। गप्पू की आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने रोते–रोते कहा– ''अब तुम उन मोबाइल टावरों के पास कभी भी नहीं जाना। मानव द्वारा निर्मित उपकरणों से निकलने वाली रेडियो तरंगों से तितलियों को नुकसान पहुँचता है।'' ठीक होने के बाद हनी–बनी तितलियों ने गप्पू से विदा ली।

गप्पू ने कहा– ''हाँ जाओ! अब दूर घने जंगलों में जाओ। वहाँ तुम्हें दुर्लभ वनस्पतियाँ जरूर मिलेंगी। भारी मन से हनी–बनी ने विदा ली और कहा– ''हम फिर आएँगे। तुम्हारे बस्तर के जंगलों में।'' पंख चमक उठे और हनी–बनी उड़ चलीं बस्तर के घने जंगलों में चुपचाप।

श्रीमती रजनी शर्मा
बस्तरिया रायपुर (छत्तीसगढ़)

फिर आई है होली

तन मन को रंगीन बनाने
फिर आई है होली।
सबको अपने रंग से सजाने
फिर आई है होली।

गालों को बदरंग बनाने
फिर आई है होली।
बच्चे बड़े, सब को हँसाने
फिर आई है होली।

अबीर और गुलाल लगाने
फिर आई है होली।
पिचकारी से रंग बरसाने
फिर आई है होली।

सबको अपने गले लगाने
फिर आई है होली।
भेदभाव नफरत को मिटाने
फिर आई है होली।

गुझिया मालपुआ खिलाने
फिर आई है होली।
रंगों का त्यौहार मनाने
फिर आई है होली।

बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

कौआ पक्षी

कौआ पक्षी बड़ा निराला,
चतुर सयाना लेकिन काला।
कोर्वस है वैज्ञानिक नाम,
बड़े निराले इसके काम।

पितृपक्ष में इनका आना,
सबने बेहद शुभ है माना।
काँव–काँव जब ये चिल्लाए,
दूर देश से कोई आए।

मृत जीवों को चट कर जाते,
ये स्कैवेंजर भी कहलाते।
करठ पिशुन बायस भी कहते,
पेड़ों पर ये खुश हो रहते।

कल जब घर में कौए आए,
चिंटू–पिंटू थे चिल्लाए।
कौओं को मत कभी भगाना,
आज सुनेंगे इनसे गाना।

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
बलरामपुर (उत्तर प्रदेश)

आओ ! गौरैया

लिये हाथ में दाना
कब तक खड़ा रहूँगा दैय्या
आँगन में उतरो गौरैय्या।

बहुत दिनों की बात नहीं है
घर मेरा कच्चा था,
लेकिन मेरा और तुम्हारा
रिश्ता तब सच्चा था।
दिन–दिन भर खेला करते थे
साथ तुम्हारे मिलकर,
तुम भी थाली में खाती थीं
साथ हमारे मिलकर।
तुम्हें हमारे साथ देखकर
खुश होती थी गैय्या।...

ठीक समय पर मेरे आँगन में
तुम आ जाती थीं,
चीं–चीं करके पूरे घर को
नित्य जगा जाती थीं।
उसके बाद शुरू होती थी
खेल–मेल की वेला,
साथ तुम्हारे पूरा बचपन
मैं मिट्टी में खेला।
मिट्टी में सनकर आते तो
माँ करती थी पिटैय्या।...

छोड़ दिया जब गाँव बचपना
भूल गया तब से ही,
खुशियाँ रूठीं साथ तुम्हारा
छूट गया जब से ही।
हाय! तरक्की ने दिखलाये
हमको ये कैसे दिन,
उसी गाँव में आज रह रहे हैं
हम मित्रों के बिन।
आ जाती तो मिलकर करते
हम–तुम ताता थैय्या।...

सत्यशील राम त्रिपाठी
गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)

प्रखर समाजवादी चिन्तक
डॉ. राम मनोहर लोहिया

विश्व में कई ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से तत्कालीन राजनीति एवं समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। डॉ. राम मनोहर लोहिया उन्हीं महापुरुषों में से एक थे। वे महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, प्रखर, विचारक, चिन्तक एवं लेखक थे। उन्होंने देश की स्वतन्त्रता में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतन्त्रता के बाद देश के नवनिर्माण में भी उनका सराहनीय योगदान रहा। वे समानता पर आधारित समाज की रचना करना चाहते थे।

डॉ. लोहिया राजनीति में शुद्धता, सादगी एवं शालीनता के प्रतीक पुरुष थे। विश्व मानवता के उपासक व विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ. राम मनोहर लोहिया बीसवीं सदी के महान समाजवादी चिन्तक थे। उनका जीवन दुःखी, पीड़ित व शोषित जनता को समर्पित था, जिनके सुधार व उत्थान के लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे। अन्याय के खिलाफ विरोध करने का उनमें अदम्य साहस था।

जीवन परिचय

डॉ. राम मनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, सन् 1910 ई. को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अन्तर्गत अकबरपुर तहसील में हुआ था। इनके पिता हीरालाल लोहिया तथा माता चंदी देवी थीं। जब ये लगभग ढाई वर्ष के थे, तभी इनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया। माता के न रहने पर इनका पालन–पोषण इनकी दादी ने किया।

बचपन से ही यह अपने पिता जी के साथ रहे और उनके जीवन से ही इन्हें राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा मिली। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अकबरपुर के प्राइमरी स्कूल में हुई। इन्होंने मुंबई से मैट्रिक, बनारस से इंटरमीडिएट और कोलकाता के विद्यासागर कॉलेज से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् डॉ. लोहिया ने बर्लिन, जर्मनी से सन् 1932 ई. में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

स्वतन्त्रता के लिए किया संघर्ष

डॉ. लोहिया सन् 1933 ई. में स्वदेश लौटे और देश में चल रहे स्वराज आन्दोलन के साथ जुड़ गए। ये भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मुखर विरोध करते रहे। सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भी इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। आन्दोलन के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उस समय काँग्रेस के सभी बड़े नेता जेलों में बन्द थे। डॉ. राम मनोहर लोहिया एवं जय प्रकाश नारायण उस समय हजारी बाग जेल में बन्द थे। सभी प्रमुख नेताओं के जेल में बन्द होने से आन्दोलन कमजोर न पड़ जाए यह सोचकर दोनों एक रात जेल के अंग्रेज पुलिस सिपाहियों को चकमा देकर हजारी बाग जेल से फरार हो गए।

डॉ. लोहिया कई माह तक भूमिगत रहे और इसी समय उन्होंने गुप्त रेडियो स्टेशन की स्थापना की। रेडियो के अनेक प्रसारणों के माध्यम से लोगों में नवीन चेतना जाग्रत की और आन्दोलन को जारी रखा। ब्रिटिश काल में ये कई बार जेल गए।

डॉ. लोहिया का पूरा जीवन संघर्षों से भरा रहा। अपने जीवन में उन्होंने अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों का नेतृत्व किया। वे हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने अँग्रेजी हटाने के लिए देशव्यापी आन्दोलन चलाया। वे चाहते थे कि जब अँग्रेज चले गए तो अँग्रेजी भाषा का देश में कोई औचित्य नहीं है।

प्रखर समाजवादी नेता व लेखक

देश की स्वतन्त्रता के बाद ये जीवनपर्यंत समाजवादी आन्दोलन के साथ जुड़े रहे। सन् 1963 ई. में ये फर्रुखाबाद संसदीय क्षेत्र से उपचुनाव में लोकसभा के सदस्य चुने गए। उन्होंने 'इतिहास चक्र', ' अँग्रेजी हटाओ', 'देश विदेश नीति कुछ पहल', 'धर्म पर एक दृष्टि', 'मार्क्सवाद और समाजवाद', 'समलक्ष्य समबोध', 'समाजवादी चिंतन', 'संसदीय आचरण', 'अँग्रेजी हटाओ' तथा 'हिन्दू बनाम हिन्दू' जैसी अनेक विश्व विख्यात कृतियों की रचना की। उनकी कृतियों में हमें उनके मौलिक विचारों की झलक मिलती है।

इन्होंने कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया तथा उनके लिए कई विचारपूर्ण लेख भी लिखे। भूमिगत रहते हुए इनकी जंगजू, आगे बढ़ो तथा मैं आजाद हूँ आदि पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुईं। इनकी रचनाओं में मौलिक चिंतन के भी पर्याप्त अंश हैं। उन्होंने 'भूमि सेना' का गठन किया और 'एक घंटा देश को दो' यह स्लोगन दिया, ये उनके मौलिक चिन्तन के प्रमुख उदाहरण हैं।

डॉ. लोहिया एक निर्भीक व्यक्ति थे। वह अपने आस–पास की घटनाओं व परिस्थितियों का निष्पक्ष विश्लेषण करते थे। उनके व्यक्तित्व में किसी भी स्तर पर कथनी और करनी में विरोधाभास नहीं था। वे चाहते थे कि मनुष्य के संपूर्ण जीवन में इंसानियत की अभिव्यक्ति हो। उन्होंने अपने कर्म व चिन्तन के द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास को सदैव प्राथमिकता प्रदान की।

उनके चिन्तन में गांधी जी के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। अहिंसा के प्रति डॉ. लोहिया की आस्था, सत्याग्रह के व्यापक प्रयोग में उनका विश्वास, रचनात्मक कार्यक्रमों में उनकी निष्ठा, विकेंद्रीकरण के आधार पर देश की राजनीति और अर्थनीति में गुणात्मक सुधार लाने का उनका संकल्प गांधी जी की वैचारिक विरासत का प्रमाण है। उनका मत था कि सत्ता का स्रोत केंद्र नहीं, गाँव की पंचायतें होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि– "जनतंत्र तभी सफल हो सकता है जब वाणी की पूर्ण स्वतन्त्रता हो और कर्म पर अनुशासन हो।" राष्ट्र को जाग्रत करना उनका मूल उद्देश्य था।

वास्तव में उनकी दृष्टि सार्वभौमिक व संपूर्ण थी। वह केवल राजनीतिज्ञ नहीं थे। वह भारतीय संस्कृति में डूबकर विश्व संस्कृति की कल्पना करते थे तथा विश्वमानव व विश्वबंधुत्व में विश्वास रखते थे। उनके विचार देश और समाज को एक सूत्र में पिरो सकते हैं क्योंकि उनके विचारों में चिंतन की गहराई के साथ कर्म की ऊर्जा पैदा करने की क्षमता भी है। उनकी प्रासंगिकता इसलिए भी है कि उनकी समाजवादी विचारधारा समस्याओं का केवल विश्लेषण ही नहीं करती अपितु उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है।

प्रेरक व्यक्तित्व का निधन

मौलिक विचारक, क्रांतिदर्शी व समाजवाद के प्रेरक स्तंभ डॉ. लोहिया का 12 अक्टूबर, सन् 1967 ई. को देहावसान हो गया। आज वे हमारे मध्य नहीं हैं, मगर उनके विचार, देशहित में किया गया उनका बलिदान, समाज उत्थान के लिए किये गये उनके कार्य, उनके आदर्श और जीवन मूल्य सदैव हमारी नई पीढ़ी को प्रेरणा एवं ऊर्जा प्रदान करते रहेंगे।

सुरेश बाबू मिश्रा
बरेली (उत्तर प्रदेश)

परमवीर चक्र विजेता

संजय कुमार

परमवीर संजयकुमार ने
हिम्मत कभी न हारी बच्चो।
रिपु की मशीनगन छीन उन्हें
दे दी शिकस्त भारी बच्चो।

कुल ग्यारह सैनिक संग उनके
पर हिम्मत कब वे हारे थे,
चुन–चुनकर पाक सैनिकों को
रण बीच उन्होंने मारे थे।

गोलियाँ लगी उनके तन पर
रण बीच खूब लड़ते–लड़ते,
फिर भी सीधी टक्कर देकर
दुश्मन को थे आगे बढ़ते।

जीवन से जिनकी यारी थी
ऐसे थे महावीर संजय,
हम नमन करें उनको आओ
जिनसे होती भारत की जय।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल
नई दिल्ली

'कसर रह गई थोड़ी' पृष्ठ 7 का शेष....

देखने–सुनने वालों ने रमसीना की इस बहादुरी के लिए उसका सम्मान किया। रमसीना के इस साहसिक कार्य के ब्यौरे को प्रमाण के साथ वीरता पुरस्कार के लिए भेजा गया तो रमसीना को दूसरों की जान बचाने के लिए अपनी जान को दाँव पर लगाने की इस भावना के लिए भारतीय बाल कल्याण परिषद की ओर से वर्ष 2003 के 'गीता चोपड़ा राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार' के लिए चुन लिया गया।

जनवरी 2004 में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर रमसीना को दिल्ली बुलाया गया। जहाँ 24 जनवरी को देश के प्रधानमन्त्री जी ने रमसीना को वीरता पदक प्रमाणपत्र नकद धनराशि के रूप में यह पुरस्कार प्रदान किया। रमसीना बड़े होकर डाक्टर बनना चाहती है। बीमारों और दुखियों का दर्द दूर कर वह उनकी सेवा करना चाहती है।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

दिमागी कसरत

नीचे दिये गये अक्षर समूह में अंग्रेजी के दो विपरीत अर्थ वाले शब्द हैं, आप इन्हें खोजे और रिक्त स्थान में लिखकर उत्तर से मिलान करें। उदाहरण के लिए –

IOUNT = IN x OUT

1. PROIORCH = P ..... x .....
2. WDERTY = ... x D .....
3. BSUEYLL = ... x .....
4. STHAOLRLT = S ..... x .....
5. PWEACAER = ... x P .....
6. FBARCOKNT = B ..... x .....
7. BEENGDIN = ... x B .....
8. LGOASISN = ... x G .....
9. MLOESATST = M ..... x L .....
10. WESRATOKNG = ... x S .....

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

विस्मयकारी भारत

'बुद्धा'स हैण्ड' कहलाने वाले उंगलियों की शक्ल के इस अनोखे फल को, जिसे 'फिंगर्ड साईट्रोन' भी कहते हैं, मुख्य रूप से भारत की उपज माना जाता है जो उत्तर-पूर्वी भारत में हिमालय के निचले क्षेत्रों में बहुतायत से उपजता है।
ऐसा माना जाता है कि यहीं से ये चीन व जापान होते हुए दुनियाभर में फैल गया।

विश्व का सबसे विशालकाय बरगद का पेड़ कोलकाता (भारत) के आचार्य जगदीश चंद्र बोस बॉटेनिकल गार्डन में है जहां इसे सन 1787 में लगाया गया था। उस समय इसकी उम्र रही होगी यही कोई 15-20 वर्ष की।
इस हिसाब से आज यह 250 साल से ऊपर की उम्र का हो गया है और इसका फैलाव चार एकड़ से भी अधिक क्षेत्र में है जो देखने में एक घने जंगल का सा आभास देता है।।

'द ब्लैक टाइगर' के नाम से मशहूर रवींद्र कौशिक भारत के एक ऐसे समर्पित जासूस थे जो नबी अहमद शाकिर के छद्मनाम से अपनी पहचान छिपाकर पाकिस्तान में वर्षों तक रहे, वहां की सेना में मेजर के पद तक पहुंचे पर दुर्भाग्यवश अपने ही एक अन्य सहयोगी की गलती से पकड़े गए और फिर लम्बे दौर तक रोंगटे खड़े कर देने वाली यातनाएं सहते हुए जिन्होंने वहीं जेल में अंतिम सांस ली।

अजमेर की 25 वर्षीया आलिशा बाफ़ना ने चावल के दाने पर सिख धर्म के मूल मंत्र 'एक ओंकार' को एक साथ हिन्दी और पंजाबी भाषा में 20 मिनट में लिखकर 'यूनिक वर्ल्ड रिकार्ड्स' में अपना नाम दर्ज करा लिया है। केवल पंजाबी भाषा में इस मंत्र में 61 शब्द हैं। आलिशा बाफ़ना महामृत्युंजय, गायत्री और नवकार जैसे अनेक मन्त्रों को चावल के दाने पर पहले ही लिख चुकी हैं।
महामृत्युंजय मंत्र लिखने में उनको केवल 4 मिनट, 14 सेकंड का समय लगा था जो अपने आप में एक अदभुत उपलब्धि है।

रवि लायटू
बरेली(उत्तर प्रदेश)

मटकू की कुश्ती

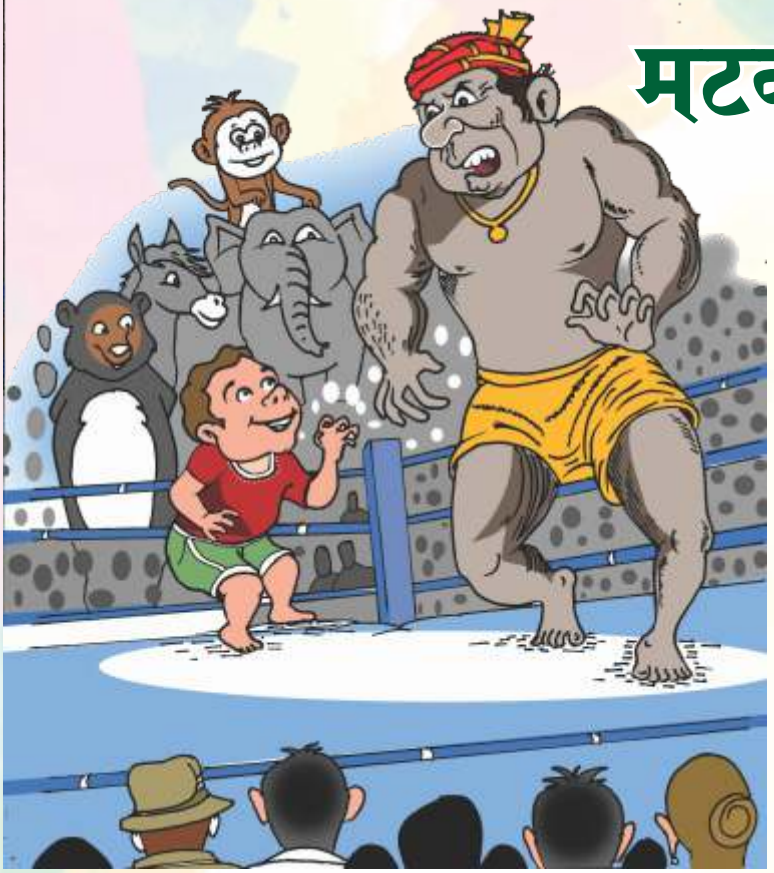

मटकू बौने के सामने यह एक चुनौती थी। लेकिन उसके पास इसके अलावा कोई और चारा नहीं था। आखिर कब तक वह कल्लू पहलवान की हरकतों को सहन करता। जब देखो तब वह उसे चिढ़ाता रहता। अब तो वह उसे राह चलते मारने–पीटने भी लगा था। मटकू बार–बार सर्कस मालिक से उसकी शिकायत करता, लेकिन वे उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देते

कल्लू पहलवान जितना मोटा–ताजा था, उससे कहीं ज्यादा काला था। देखने में वह इतना भयानक लगता था कि कोई भी उससे उलझना नहीं चाहता। उसके पास सर्कस का कोई काम नहीं था। उसे सर्कस मालिक की सुरक्षा के लिए रखा गया था। खूब जमकर खाना और सर्कस में काम करने वालों को डराना–धमकाना, बस यही उसका काम था। सभी उससे बहुत परेशान रहते थे।

लेकिन आज तो हद हो गयी। सर्कस में काम करने वाले लोग जब खाना खाने बैठे तो कल्लू भी वहाँ आ धमका। फिर तो उसकी हरकतें शुरू हो गई। वहाँ खाना खा रहे लोगों को वह परेशान करने लगा। "अरे मटकू। तू तो एक ही बार खाना खाया कर। छोटा सा तो है। क्या करेगा ज्यादा खाकर ?" इतना कहकर वह जोर–जोर से हँसने लगा। मटकू ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। "तू चाहे जितना खाये–पीये, रहेगा बौना ही। मेरे जैसा लम्बा और ताकतवर नहीं बन सकता।" कल्लू ने उसे फिर छेड़ते हुए कहा। बेचारा मटकू सर झुकाये चुपचाप खाना खाता रहा।

तभी मटकू बौने ने एक और रोटी की माँग की। रोटी वाला मटकू को रोटी देने उसकी ओर बढ़ा। लेकिन कल्लू ने उसे रोटी देने से मना कर दिया। अब तो मटकू क्रोध से पागल हो गया। उसने मन ही मन तय किया कि वह किसी भी तरह कल्लू को सबक सिखा कर रहेगा। खाना खाने के बाद मटकू पास में रखे एक बक्से पर चढ़कर बैठ गया। कल्लू पहलवान के लिए खाना परोसा जाने लगा। वह रोटियों पर रोटियाँ खाये जा रहा था।

"चाहे जितनी रोटियाँ खा ले कल्लू। मुझ से ज्यादा ताकतवर नहीं बन सकता।" मटकू उसे चिढ़ाते हुए बोला। "क्या तू मुझसे ज्यादा ताकतवर है? तू होश में तो है न।" कल्लू उसकी बात सुनकर हँसने लगा। "क्यों? इसमें तुझे सन्देह है। अगर है तो आ जाना कभी अखाड़े में। कर लेंगे दो–दो हाथ।" मटकू इतने गुस्से में था कि उसने कल्लू पहलवान को चुनौती तक दे डाली। कल्लू पहलवान उसे रोकता रहा, लेकिन वह वहाँ से चला गया।

कल्लू पहलवान को आज तक किसी ने खुली चुनौती नहीं दी थी। लेकिन आज तो उसे एक बौने ने चुनौती दे दी। अब तो उसका मटकू बौने से कुश्ती लड़ना आवश्यक हो गया था। आखिर यह उसके सम्मान की बात थी। उधर मटकू ने कल्लू पहलवान को चुनौती तो दे दी। लेकिन वह जानता था कि कल्लू को हराना बहुत कठिन है और अगर वह कल्लू से हार गया, तब तो कल्लू का मान और बढ़ जायेगा। मटकू धर्म संकट में फँस गया था।

अगली सुबह वह केले और चने लेकर चम्पू बन्दर के पास पहुँचा। यह उसका रोज का काम था। सर्कस में काम करने वाले हाथी, घोड़े, बन्दर, चिड़ियाँ यही सब तो उसके दोस्त थे। उनसे वह अपने मन की बात कर सकता था। उसने चम्पू बन्दर को सारी बात बतायी। पहले तो चम्पू बन्दर शान्त बैठकर मटकू की बात सुनता रहा। फिर अचानक अपने पिंजरे में उछल–कूद मचाने लगा। कभी ऊपर पहुँच जाता, तो कभी नीचे। मटकू उसके संकेत को समझने का प्रयास करने लगा। कुछ देर चम्पू बन्दर की उछल–कूद देखने के बाद वह चम्पू बन्दर का संकेत समझ गया।

उसे समझ में आ गया कि उसे कुश्ती ताकत से नहीं चतुराई से लड़नी होगी। तभी वह कल्लू पहलवान को हरा सकेगा। "धन्यवाद मेरे दोस्त! तुम जैसा चाहते हो, मैं वैसी ही तैयारी करूँगा। तुमने तो मेरी मुश्किल को थोड़ा आसान कर दिया।" मटकू चम्पू बन्दर की पीठ थप–थपाकर बोला।

रविवार का दिन आ गया। कुश्ती के लिए आज का दिन तय किया गया था। सुबह से ही सर्कस के लोग आज की कुश्ती को लेकर उत्सुक थे। कल्लू पहलवान को कोई चिन्ता नहीं थी। मटकू को हराने के लिये उसने किसी अभ्यास की भी आवश्यकता नहीं समझी। वहीं मटकू ने खूब तैयारी की थी। यह कुश्ती उसके लिये जीवन–मरण का प्रश्न बन गयी थी।

सर्कस के एक ओर कुछ मोटे गद्दे बिछा दिये गये। जिस पर कुश्ती होनी थी। सर्कस के मालिक ने जीतने वाले को पाँच सौ रुपये का पुरस्कार घोषित कर दिया था। सर्कस में काम करने वाले लोग गद्दे के चारों ओर बैठ गये। कल्लू पहलवान और मटकू आमने–सामने आ गये। तभी सर्कस के मैनेजर ने जोर की सीटी बजाई। कुश्ती शुरू हो गयी।

कल्लू पहलवान मटकू पर झपटा। लेकिन मटकू तो पहले से तैयार था। वह तुरन्त पलटी मार गया। कल्लू पहलवान लड़खड़ा गया। लोगों ने जोरों की ताली बजायी। कल्लू पहलवान पलट कर फिर से मटकू पर झपटा। मटकू बौना होने के कारण इस बार कल्लू पहलवान के पैरों के बीच से निकल गया। कल्लू पहलवान फिर लड़खड़ा गया। मटकू की चतुराई देखकर वहाँ बैठे लोग– "मटकू–मटकू" चिल्लाने लगे।

मटकू कल्लू पहलवान को कोई मौका नहीं देना चाहता था। कल्लू पहलवान बुरी तरह तिलमिला गया था। मटकू को पकड़ने के उसके सारे प्रयास विफल हो रहे थे। मटकू अपनी कलाबाजियों से बार–बार बच निकलता। भारी–भरकम शरीर होने के कारण कल्लू पहलवान थक चुका था। वहीं मटकू अपनी उछल–कूद से उसे लगातार परेशान कर रहा था।

कल्लू पहलवान अब बुरी तरह हाँफने लगा। मटकू इसी मौके की तलाश में था। इस बार जैसे ही कल्लू पहलवान उसकी ओर झपटा, मटकू तेजी से उसके पैरों के बीच से होता हुआ पीछे की ओर निकल गया। जब तक कल्लू कुछ समझ पाता, मटकू ने तेजी से पलट कर कल्लू के दोनों पैरों को पकड़ लिया। फिर तेजी से अपनी ओर खिंचा।

यह क्या? कल्लू पहलवान मुँह के बल आगे की ओर गिर पड़ा। वह इतना थक गया था कि वह उठ नहीं पा रहा था। अचानक मटकू लपक कर उसकी पीठ पर चढ़ गया। लोग जोर–जोर से तालियाँ बजाने लगे। मटकू कल्लू पहलवान की पीठ पर बैठकर लोगों का अभिवादन स्वीकार करने लगा। तभी मैनेजर ने आखिरी सीटी बजायी। मटकू को विजेता घोषित कर दिया गया। मटकू के सभी बौने साथी, साथ ही हाथी, घोड़े, बन्दर सभी खुशियाँ मनाने लगे। मटकू ने आज वह कर दिखाया, जो कोई सोच भी नहीं सकता था। सर्कस

देखें पृष्ठ 21...

वर्ग पहेली

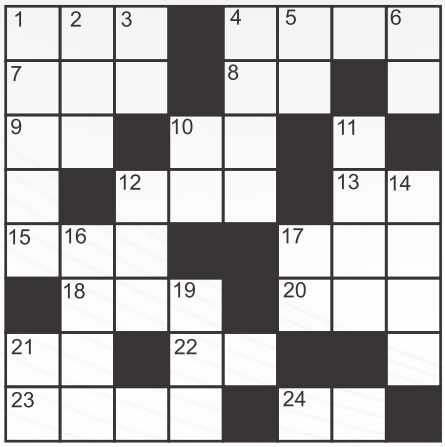

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. चन्द्रमा, चाँद, मयंक, विधु (3)
4. सावधान, सतर्क रहने को कहना (4)
7. जल छिड़काव हेतु चमड़े से बना थैला (3)
8. मिट्टी, रेती से बना ऊँचा, भू भाग (2)
9. नया, नवल (2)
10. न्याय व व्यवस्था हेतु ग्रामीणों द्वारा चुना हुआ व्यक्ति, पाँच (2)
12. साबुत, बिना टूटा, पूरा (3)
13. ब्राह्मण (2)
15. स्तम्भ, कुतुब.... (3)
17. सूअर, शूकर (3)
18. बालों में लगी फूलों की माला (3)
20. लक्ष्मी, रमा (3)
22. उत्तरी भारत के केन्द्र शासित राज्य का आधा नाम (2)
23. भारत का एक राज्य जिसका स्थापना दिवस 30 मार्च को मनाया जाता है (4)
24. वर्तमान दिन (2)

ऊपर से नीचे :

1. अयोध्या नरेश दशरथ के बड़े पुत्र का जन्म दिवस (5)
2. श्रीकृष्ण का एक नाम (3)
3. संदेह, सुबहा (2)
4. सिंधी समाज का मुख्य पर्व (4)
5. पानी, अंबु, तोय (2)
10. पक्षियों के उड़ने का अंग (2)
11. बिना रुके, बिना विश्राम के लगातार (4)
12. प्रार्थना, विनती (3)
14. हिरण्य कश्यप का पुत्र, नारायण भक्त जिसे अग्नि जला नहीं सकी (4)
16. सर्पराज, नागों का राजा (4)
17. बगुला (2)
19. राजा, शासक (3)
21. शक्कर का बारीक चूर्ण (2)
22. लोग, प्रजा (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

रहीम कहते हैं...

कि जिस प्रकार दिन में चन्द्रमा आभाहीन हो जाता है उसी प्रकार जो व्यक्ति किसी व्यसन में फँस कर अपना धन गँवा देता है वह निष्प्रभ हो जाता है।

संपति भरम गँवाई के हाथ रहत कछु नाहिं,
ज्यों रहीम ससि रहत है, दिवस अकासहि माहिं।

मम्मी मैं भी बड़ी हो गई

मम्मी मैं भी बड़ी हो गई
घिसट रही थी घुटने के बल।
लेकिन अब मैं खड़ी हो गई,
मम्मी मैं भी बड़ी हो गई।

सरक–सरक कर इस कोने से
उस कोने पहुँची कई बार।
पता नहीं कमरे के चक्कर,
लगा आई मैं कितनी बार।
छूट गया घुटनों का बंधन,
खुली हुई हथकड़ी हो गई।...

पकड़–पकड़ दीवार परिक्रमा,
कमरे की कर डाली है।
खूब कैमरे चमके मेरी,
फोटो गई निकाली है।
खुशियों की इस दीवाली में,
जैसे मैं फुलझड़ी हो गई।...

मुझे देखकर हँसते थे सब,
बजा–बजा ताली थे खुश।
चलते–चलते फिसल गई तो,
सभी हो गए बिलकुल चुप।
पता नहीं ऊधम –मस्ती में,
मुझसे क्यों गड़बड़ी हो गई।...

प्रभुदयाल श्रीवास्तव
छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश)

मुन्नू की पीड़ा

अपनी पीड़ा के गीतों को
मुन्नू मन ही मन गाता है।

सुबह देर कुछ हो जाए तो
पारा सबका लगता चढ़ने,
निपट इसी से जल्दी–जल्दी
चल देता है मुन्नू पढ़ने।

भरी दुपहरी घर को आकर
मुन्नू थोड़ा सुस्ताता है,
अपनी पीड़ा के गीतों को
मुन्नू मन ही मन गाता है।

खाना खा फिर ट्यूशन जाता
थककर शाम ढले घर आता,
झाँका करता है खिड़की से
दोस्त न कोई पर दिख पाता।

बाहर का घिरता अँधियारा
मुन्नू के मन पर छाता है,
अपनी पीड़ा के गीतों को
मुन्नू मन ही मन गाता है।

रोटी खाकर टीवी देखो
होमवर्क फिर करते रहना,
सो जाना अपने कमरे में
है मम्मी–पापा का कहना।

बचपन के स्वर्णिम दिवसों से
मुन्नू का बस यह नाता है,
अपनी पीड़ा के गीतों को
मुन्नू मन ही मन गाता है।

धीरे–धीरे मुन्नू का यह
भोला बचपन मर जाएगा,
घुटन भरी इस नीरसता का
घाव कभी ना भर पाएगा।

कैद पिंजरे में पंछी–सा
मुन्नू भी रो मुस्काता है,
अपनी पीड़ा के गीतों को
मुन्नू मन ही मन गाता है।

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
कोटा (राजस्थान)

नाटिका

पानी की कहानी

पात्र : एलियन, पेड़, पानी की बूँद, बादल

(मंच पर एक पेड़ खड़ा हुआ है। अचानक बवंडर जैसा शोर सुनाई पड़ता है। फिर यान के जैसी सीटी की आवाज सुनाई पड़ती है। मानो कोई विमान दूर से उड़ता हुआ पास आया हो। एक ओर से अन्य ग्रह का प्राणी 'एलियन' धीरे–धीरे सतर्कता से कदम रखता हुआ आता है। पेड़ को आश्चर्य से देखता है, डरते हुए छूता है।)

पेड़ : डरो नहीं दोस्त, मैं पेड़ हूँ। लोगों को छाया और फल देता हूँ।

एलियन : माफ करना पेड़ भाई। मैंने पहली बार पेड़ देखा है ना, इसलिए थोड़ा डर गया था।

पेड़ : तुम कौन हो?

एलियन : मैं... मैं एक दूर ग्रह 'जेन' का निवासी हूँ। मेरा यान रास्ता भटक गया और मैं यहाँ पहुँच गया।

पेड़ : ओ! तो तुम एलियन हो।

एलियन : एलियन!

पेड़ : हाँ, हमारे यहाँ दूसरे ग्रह के वासी को एलियन ही कहते हैं।

एलियन : अच्छा! पर ये कौनसी जगह है। मैं कहाँ आ गया हूँ पेड़ भाई?

पेड़ : ये पृथ्वी है। हमारी सुन्दर पृथ्वी।

एलियन : ओ! तो मैं पृथ्वी पर आ गया हूँ। यहाँ तो लोग 100–100 वर्षों तक जिन्दा रहते हैं ना? हमारे ग्रह पर तो जीवन बहुत ही छोटा होता है।

(तभी पानी की बूँद एलियन के हाथ पर गिरती है। वह चौंक पड़ता है।)

एलियन : (हथेली पर देखते हुए) अरे! ये क्या है? पारदर्शी गीली–गीली सी।

(दूसरी ओर से पानी की बूँद आती है।)

जल बूँद : ये मैं हूँ, पानी की एक बूँद।

एलियन : पानी की बूँद! ये पानी क्या होता है ?

(पेड़ हँसता है।)

पेड़ : तुम पानी को नहीं जानते! अरे पानी ही तो पृथ्वी के जीवन का आधार है। पानी न हो तो पृथ्वी ही खत्म हो जाए।

जल बूँद : हाँ, मैं वही पानी की बूँद हूँ। यहाँ लोग मुझे जल भी कहते हैं। मुझ से ही तो इस पृथ्वी पर नदियाँ हैं, झरने हैं, तालाब हैं।

पेड़ : हाँ, और हम जैसे पेड़ भी पानी के कारण ही हैं। पानी हमारा अमृत है। पानी से सिंचित होकर ही ये चारों ओर हरियाली है। खेत–खलिहान, फल–फूल पनप रहे हैं।

एलियन : अच्छा! तभी! मुझे अब पता चला। वह क्या

चीज है जो हमारे ग्रह पर नहीं है। पानी, पानी हमारे यहाँ नहीं है इसलिए हमारे ग्रह पर लोग जल्दी मर जाते हैं।

जल बूँद : हमारी पृथ्वी पर तो मनुष्य पानी के बिना रह ही नहीं सकता। पृथ्वी का प्रत्येक जीव–जन्तु, पौधे–वनस्पति सब–कुछ पानी की वजह से ही तो पृथ्वी पर हैं।

एलियन : ओ! तब तो तुम बहुत ही मूल्यवान हो पानी। अनमोल हो पानी, तुम अनमोल हो पानी तुम अनमोल हो...

(दो–तीन बार यही दोहराता है तो पेड़ व पानी की बूँद हँस पड़ते हैं।)

एलियन : पर तुम्हारा जन्म हुआ कैसे?

जल बूँद : मेरी कहानी तो बड़ी लम्बी है। पर तुम्हें कुछ खास बातें बताती हूँ।

पेड़ : बताओ, बताओ! मुझे भी सुनना है।

जल बूँद : मेरे पुरखे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन नामक दो गैस के रूप में सूर्यमंडल की लपटों में विद्यमान थे। एक दिन एक बड़ा सा प्रचंड प्रकाश–पिंड तेजी से सूर्य की ओर बढ़ा। लगता था कि वह सूर्य से टकरा जाएगा। पर वह पास से निकल गया।

पेड़ : तब तो सूर्य टक्कर से बच गया।

जल बूँद : हाँ, किन्तु पिंड की तेज गति के आकर्षण से सूर्य का एक भाग टूटकर अलग हो गया और फिर वह अनेक टुकड़ों में विभक्त हो गया। उन्हीं में से एक टुकड़ा हमारी पृथ्वी बनी। पहले आग का गोला थी हमारी पृथ्वी।

एलियन : तो उस आग के गोले में तुम कहाँ से आ गयी ?

जल बूँद : धीरे–धीरे आग का गोला ठंडा हो गया और पृथ्वी बन गयी। बस फिर यहाँ हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक क्रिया के कारण पानी की बूँद उत्पन्न हो गयी।

एलियन : एक बात और पूछनी है मुझे। तुम्हारी पृथ्वी दूर से नीली क्यूँ दिखती है?

पेड़ : ये तो मुझे भी पता है। वो है ना पृथ्वी पर 70 प्रतिशत से ज्यादा पानी ही है। बड़े–बड़े समुद्रों में पानी ही पानी फैला हुआ है ना। (तभी बिजली के कड़कड़ाने और बादलों के गरजने की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। एलियन फिर डर जाता है। बारिश के स्वर सुनाई देते हैं। पेड़ ऊपर देखकर खुश होता है।)

पेड़ : वाह! वर्षा आ गयी। वर्षा आ गयी।

एलियन : वर्षा! अब ये वर्षा क्या है भई?

जल बूँद : ये जो ऊपर आसमान से पानी की तेज बूँदें गिर रही हैं ना, ये ही है वर्षा।

एलियन : अच्छा! पर ये आती कहाँ से है? आसमान में कोई फव्वारा लगा है क्या?

(पेड़ व पानी की बूँद हँसने लगती हैं। तभी एक ओर से बड़ा सा बादल आता है।)

बादल : फव्वारा नहीं। मैं लाता हूँ वर्षा।

(बादल गरजने के स्वर सुनाई पड़ते हैं।)

एलियन : अरे! ये काला–कलूटा कौन है भई?

बादल : मैं बादल हूँ बादल। मैं ही पृथ्वी पर वर्षा को लेकर आता हूँ।

एलियन : पर कैसे?

जल बूँद : मैं बताती हूँ। दरअसल ये एक चक्र है– जल चक्र यानी वाटर साइकिल

एलियन : मतलब?

पेड़ : मतलब ये भैया कि गर्मी के दिनों में जब सूरज की तेज किरणें पृथ्वी पर समुद्र, नदियों आदि के जल पर लगातार पड़ती है तो इससे पानी गरम होकर भाप बनने लगता है।

बादल : और भाप हल्की होने के कारण ऊपर आसमान की ओर उठती है। इसे ही वाष्पीकरण कहते हैं। फिर आसमान में आकर ये भाप ठंडी होकर बादल बन जाती है। और हाँ याद रखना मैं हमेशा काला ही नहीं होता हूँ। कभी–कभी मैं गोरे

रंग में भी दिखाई देता है।

जल बूँद : (हँसकर) हाँ। फिर जब बादल आपस में टकराते हैं तो बिजली कड़कती है और वर्षा शुरू हो जाती है। समझे?

एलियन : हाँ और फिर नदियों, तालाबों, समुद्रों में पानी फिर से भर जाता है। ठीक है ना?

बादल : बिलकुल सही पकड़े हो मियाँ। लगता है थोड़ी बहुत अकल तो है तुममें।

(सभी हँसते हैं।)

एलियन : अच्छा। तो ये हैं जल–चक्र।

पेड़ : हाँ। पानी फिर भाप फिर बादल फिर वर्षा फिर पानी यह जल–चक्र साल दर साल यूँ ही चलता रहता है, तभी तो पृथ्वी पर पानी ही पानी है।

एलियन : आप सब भी समझ गए ना?

सभी : पानी तुम अनमोल हो (गाने लगते हैं)

उमेश कुमार चौरसिया
अजमेर (राजस्थान)

'मटकू की कुश्ती...' पृष्ठ 15 का शेष....

मालिक ने मटकू को पाँच सौ रुपये का पुरस्कार दिया।

अगले दिन जब मटकू कल्लू पहलवान के सामने से गुजरा तो कल्लू ने मुँह लटका रखा था। मटकू ने उसके पास पहुँच कर उससे हाथ मिलाया। "देखो कल्लू। किसी को कमजोर समझने की भूल कभी मत करना। कभी–कभी छोटे भी कुछ ऐसा कर जाते हैं, जो बड़े नहीं कर सकते।" मटकू कल्लू पहलवान से बोला।

"मटकू। यह लो मैं तुम्हारे पुरस्कार के पैसे से मिठाई ले आया।" झब्बू बौना वहाँ मिठाई लेकर आया। "हाँ झब्बू। इसे सभी लोगों में बाँट दो। कल्लू को तो मैं अपने हाथों से मिठाई खिलाऊँगा।" मटकू मिठाई का एक टुकड़ा कल्लू के मुँह में डालते हुए बोला। कल्लू ने भी उसे मना नहीं किया। उस दिन के बाद से कल्लू पहलवान ने किसी को परेशान नहीं किया।

पवन कुमार वर्मा
वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

बच्चों का देश के प्रकाशन के सम्बन्ध में सूचना

फार्म – 4

(नियम 8 देखिए)

प्रकाशन स्थान	:	राजसमन्द (राजस्थान)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)		
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
मुद्रक का नाम	:	मुकेश चौधरी
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	प्लेजर डिजिटल प्रेस 10, गुरु रामदास कोलोनी अपोजिट एम.बी. कॉलेज, उदयपुर–313002 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	संचयशील जैन
क्या भारतीय नागरिक है?	:	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश पता)	:	नहीं
पता	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा) चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, सर्किट हाउस रोड, पो.बा.सं. 28 राजसमन्द–313 333 (राज.)

मैं संचयशील जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 31 मार्च, 2023

संचयशील जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

लेखकों से निवेदन

यह हर्ष का विषय है कि देश भर के विद्वान एवं गणमान्य साहित्यकारों का बच्चों का देश पत्रिका को निरन्तर रचनात्मक सहयोग मिल रहा है। आपसे निवेदन है कि हमारे कार्यालय द्वारा माह विशेष की रचनाएँ 45 दिन पहले चयन की जाती हैं। समसामयिक रचनाओं का यथासमय प्रकाशन हो सके इसके लिए आवश्यक है कि आप 3 माह पूर्व हमें रचनाएँ भेजें। आपकी ऐन वक्त पर प्राप्त श्रेष्ठ रचनाओं को भी हम स्थान नहीं दे पाते हैं अत: हमारे इस निवेदन को ध्यान में रखकर सहयोग प्रदान करें।

– सम्पादक

दुनिया का सबसे बड़ा ताला

ताालों का चलन सारी दुनिया में है। घर, दफ्तर, फैक्ट्रियाँ आदि में सुरक्षा की दृष्टि से ताले लगाए जाते हैं। यूँ तो आपने छोटे–बड़े कई तरह के ताले देखे होंगे।

सबसे बड़ा ताला – तालों के लिए मशहूर उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में दुनिया का सबसे बड़ा ताला बनाया गया है। करीब 400 किलो वजन वाला यह ताला 30 किलो की चाबी से खुलेगा। ताले को अयोध्या में बन रहे राम मंदिर को समर्पित किया जाएगा। इस पर राम दरबार की आकृति उकेरी गई है। अलीगढ़ के ज्वालापुरी इलाके में रहने वाले सत्यप्रकाश और उनकी पत्नी रूक्मणि को यह ताला बनाने में करीब छह महीने लगे। उनका कहना है कि अयोध्या में बन रहे भव्य राम मंदिर को ध्यान में रखकर यह विशेष ताला बनाने का विचार आया। इससे पहले उन्होंने 300 किलो का ताला बनाया था। उनका कहना है कि कारोबार में उन्होंने काफी पहचान बना ली है। अब अलीगढ़ को नई पहचान देने के लिए उन्होंने दुनिया का सबसे बड़ा ताला तैयार किया है।

छह इंच मोटाई वाला ताला लोहे का है। इसके लिए दो चाबी तैयारी की गई हैं। ताले का कड़ा चार फीट का है। अयोध्या भेजने से पहले ताले में कई बदलाव किए जाएँगे। इसका बॉक्स, लीवर, हुड़का पीतल से तैयार किया जाएगा। जंग से बचाव के लिए ताले पर स्टील की स्क्रेप सीट लगाई जाएगी। वह चाहते हैं कि ताले को मंदिर के म्यूजियम में रखा जाए।

भविष्य के ताले– क्या आप भी अकसर चाबी रखकर भूल जाते है? कभी चाबी भूलने की वजह से आपको अपने ही घर से बाहर भी खड़ा रहना पड़ा होगा। अब चाबी की चिन्ता भूल जाइए। सारे तालों की चाबी और आपकी सुरक्षा से जुड़ी सारी जानकारी आपकी स्किन में ही होगी। ये तकनीक दुनिया में आ चुकी है।

दुनिया भर में हजारों लोगों ने रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटीफिकेशन टेक्नोलॉजी (RFID) से त्वचा में जानकारी वाली चिप फिट करा ली है। ये इम्प्लांट करने के बाद अपना काम शुरू करते हैं। इम्प्लांट में कुछ ही सैकंड का समय लगता है। ऐसा लगता है कि चावल का दाना शरीर में इंजेक्ट कर दिया हो।

चिप में सिर्फ कार, घर और ऑफिस की चाबी ही नहीं बल्कि बिजनेस कार्ड की जानकारियाँ भी रहेगी। ये सभी इम्प्लांट रेडियो फ्रीक्वेंसी तकनीक के होने के बाद सफेद हो जाते हैं। अब आप अँगुली के इशारे से ही गेट खोल सकते हैं।

फोन से खुलेगा दरवाजा– आज तरह–तरह के गैजेट्स आ चुके हैं जो आपका काम आसान कर देते हैं। यदि आप दरवाजे के पास गए बिना उसे खोलना चाहते हैं तो अब यह सम्भव है। स्मार्टफोन में ऐसी तकनीक का इस्तेमाल किया गया है कि जैसे ही आप दरवाजे के पास पहुँचते हैं, यह लॉक आपकी पहचान करके दरवाजा खोल देगा। आपके अलावा, यदि कोई अन्य व्यक्ति दूसरे फोन से दरवाजा खोलने की कोशिश करता है तो यह लॉक मोबाइल पर सूचना भेजकर अलर्ट कर देता है। 'नोक पेडलॉक' नाम का यह स्मार्ट ताला मोबाइल और छूने भर से काम करता है। अमेरिकी कंपनी फज (FUZ) डिजाइन ने तैयार किया है।

देखें पृष्ठ 25....

बच्चों की कुर्बानी

हर्षिल वन के एक छोर पर बहुत सारे हरे भरे पेड़ खड़े थे। यह छोर वन के अन्य हिस्से से एक रास्ते के द्वारा कटा हुआ था। ताज्जुब की बात थी कि उन घने पेड़ों पर किसी पक्षी का घोंसला नहीं था। यह देखकर एक दिन जोजो तोते ने कहा– "पीकू!वन में पक्षियों की इतनी ज्यादा तादाद है फिर भी इस जगह पेड़ों पर किसी पक्षी ने अपना घोंसला नहीं बनाया।"

"मुझे नहीं पता। मैंने कभी इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। मुझे लगता है किसी ने इसके बारे में नहीं सोचा कि इस जगह पर पक्षी घोंसला क्यों नहीं बनाते?" पीकू कबूतर बोला। "हमें इस बारे में पूछना चाहिए था।" "किससे पूछें? यहाँ कोई पक्षी ऐसा है ही नहीं जो इस बारे में जानकारी रखता हो।" जोजो की कही बात पीकू के दिमाग में घूम रही थी। उसने कई पक्षियों से इस बारे में पूछा।

चिंकी बया बोली– "हम अपने घोंसले ऐसे पेड़ों की डाल पर बनाते हैं जहाँ पहले से घोंसले बने होते हैं।" "यही बात हमारे साथ भी है। अकेली जगह पर घोंसला बनाने में हमें डर लगता है।"

"आस पास कोई पड़ोसी न हो तो रहने का मजा नहीं आता। पता नहीं क्यों एक भी पक्षी यहाँ रहने के लिए तैयार नहीं होता। दोपहर में यहाँ पर पक्षी भले ही आराम कर लेते हो लेकिन बसेरा किसी का भी नहीं है।" चिंकी बोली। थोड़ी देर आपस में बातें कर वे वहाँ से उड़ गए। एक दिन इस वन में टिक्कू और चंची मैना का जोड़ा आया। वे दोनों स्वभाव से झगड़ालू थे, इसी वजह से कहीं भी ज्यादा दिन टिक नहीं पाते थे। यह खबर कंठू कौए ने सबको पहले ही बता दी थी। कोई उन्हें अपना पड़ोसी बनाने के लिए तैयार नहीं था।

वे नीम के पेड़ पर पहुँचे। उन्हें देखकर जोजो बोला– "लगता है तुम इस वन में नए आए हो।" "ठीक पहचाना अब हम इसी वन में इस जगह रहना चाहते हैं।" "माफ करना यहाँ पर किसी मैना का ठिकाना नहीं है। अच्छा होगा तुम उस जगह रहो जहाँ तुम्हारी प्रजाति की चिड़िया रहती हैं।" यह सुनकर टिक्कू अपने को रोक नहीं पाया और गुस्से से बोला– "तुमने यहाँ का ठेका ले रखा है क्या?" "यही समझ लो। अगर तुमने ज्यादा अकड़ दिखाई तो हम सब इकट्ठे होकर तुम्हें यहाँ तो क्या इस वन में भी रहने नहीं देंगे।" जोजो बोला। यह सुनकर वे तुरन्त वहाँ से उड़ गए।

किसी भी पक्षी ने उन्हें अपने आसपास घरौंदा नहीं बनाने दिया। मजबूर होकर वे वन के उस

छोर पर आ गए जहाँ किसी पक्षी का घोंसला नहीं था। टिक्कू बोला– "मुझे यह जगह घोंसले के लिए अच्छी लग रही है।" "यहाँ आस पास किसी का भी ठिकाना नहीं है।" "तो क्या हुआ? हमें देखकर और पक्षी भी यहाँ आ जाएँगे। किसी न किसी को तो शुरूआत करनी ही पड़ती है।" "और अगर नहीं आए तो...।" चंची ने शंका जताई। "चिन्ता मत करो। हमारे बच्चे बड़े होकर यही आसपास रहने लगेंगे। जल्दी ही यह जगह मैना विहार के नाम से जानी जाने लगेगी।" टिक्कू हँसकर बोला। चंची को यह बात जँच गई। उन्होंने वहाँ पेड़ पर घोंसला बनाना शुरू कर दिया।

यह देखकर उस जगह रहने वाला पटकू चींटे का दल बहुत खुश हो गया। दोपहर में यह खबर उसके दल के एक सदस्य ने उसे दी। वह बोला– "पटकू बहुत दिनों बाद यहाँ के पेड़ों पर मैना का जोड़ा घोंसला बना रहा है।" "क्या तुम सच कह रहे हो?" "हाँ मैंने आज उन्हें घोंसला बनाते हुए देखा।" "ठीक है दल के सभी सदस्यों को कह दो कि अभी कुछ दिन तक वे उस तरफ न जाए। पहले घोंसला बनने दे। उसके बाद हम आगे की कार्रवाई करेंगे।"

कुछ ही दिनों में उनका घोंसला तैयार हो गया था। आसपास से किसी पक्षी ने उन्हें इस जगह के बारे में कुछ नहीं बताया। घोंसला तैयार होने के बाद वे दोनों बहुत खुश थे। समय आने पर चंची ने उसमें दो अंडे दिए। वह दिन भर अंडे सेकती और टिक्कू उसके लिए खाने की व्यवस्था करता। कुछ ही दिन में उनसे दो नन्हें बच्चे निकाल आए। उन्हें देखकर वे दोनों बहुत खुश थे।

पटकू चींटे का दल कब से इसी दिन का इन्तजार कर रहा था। उसके दल के भेदी चींटे ने यह खबर पटकू तक पहुँचा दी। "अंडों से बच्चे निकल आए हैं।" "ठीक है। अपने दल के सभी सदस्यों को सचेत कर दो। जैसे ही वे दोनों मैना भोजन के लिए घोंसले से बाहर जाएँ। बस तुम अपना काम शुरू कर देना।" टिक्कू और चंची को अब बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था करनी थी। टिक्कू बोला– "तुम यहाँ रहो। मैं खाना लेकर आता हूँ।" "अब हम दोनों को ही बच्चे पालने में मेहनत करनी होगी। अकेले तुम्हारे करने से काम नहीं चलेगा। चलो थोड़ी देर के लिए मैं भी तुम्हारे साथ खाना ढूँढ़ने चलती हूँ।" चंची बोली।

वे दोनों बच्चों को छोड़कर खाना ढूँढ़ने निकल गए। कुछ देर में मुँह में खाना लिए जब वे लौटकर आए तो घोंसले की हालत देखकर चौंक गए। पूरे घोंसले को ढेर सारे काले चींटों ने घेर लिया था और वे उनके बच्चों पर चिपक गए थे। यह देखकर चंची रोने लगी। "हम बरबाद हो गए। हमारी इतने दिनों की मेहनत बेकार चली गई। जरा सी देर में इन हत्यारे चींटों ने हमारे बच्चों पर हमला कर उन्हें अपना शिकार बना दिया। वे बेचारे तो अभी ठीक से हिलडुल भी नहीं पाते थे।" "चलो जल्दी से इनका सफाया करना शुरू करो।" टिक्की बोला।

"इतने सारे चींटों का सफाया करना हमारे बस का नहीं है। इनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही हैं। तुम कुछ और उपाय सोचो, हम अपने बच्चों की रक्षा कैसे कर सकते हैं?" चंची बोली। "अब बहुत देर हो गई है चंची। यह सब तो हमें यहाँ घोंसला बनाने से पहले सोचना चाहिए था। इस वन में हमारा कोई अपना नहीं है जिससे हम मदद माँग सके। इन चींटों ने हमारे बच्चों को हमेशा के लिए हमसे दूर कर दिया है।" उदास होकर टिक्कू बोला।

"अब मेरी समझ में आ रहा है इस जगह पर किसी पक्षी ने अपना घोंसला क्यों नहीं बनाया? इन्हीं हत्यारे चींटों के आतंक की वजह से पक्षियों ने यहाँ रहना छोड़ दिया होगा।" चंची बोली। "यह बात और पक्षी हमें बता सकते थे।" "हमने किसी से सीधे मुँह बात ही नहीं की। अब क्या होगा?" चंची बोली तो टिक्कू वहाँ से उड़कर दूर चला गया। वह अपने बच्चों की ऐसी दुर्दशा नहीं देख सकता था। उसके पीछे–पीछे चंची भी आ गई।

पटकू चींटे का पूरा कुनबा आज बहुत खुश था। वे आकार में बड़े और स्वभाव से दुष्ट थे। वे सब मिलकर किसी छोटे जीव को मिनटों में चट कर जाते थे। इसी वजह से पक्षियों ने वहाँ घोंसला बनाना छोड़ दिया था। बच्चों की गंध पाते ही उनका पूरा दल वहाँ पहुँच जाता। वे रोज नजदीक से कीड़े मकोड़े पकड़कर अपनी खाने की व्यवस्था करते। जब से टिक्कू और चंची मैना का जोड़ा यहाँ आया था वे बहुत खुश थे। उन्हें इसी दिन का इन्तजार था। आज

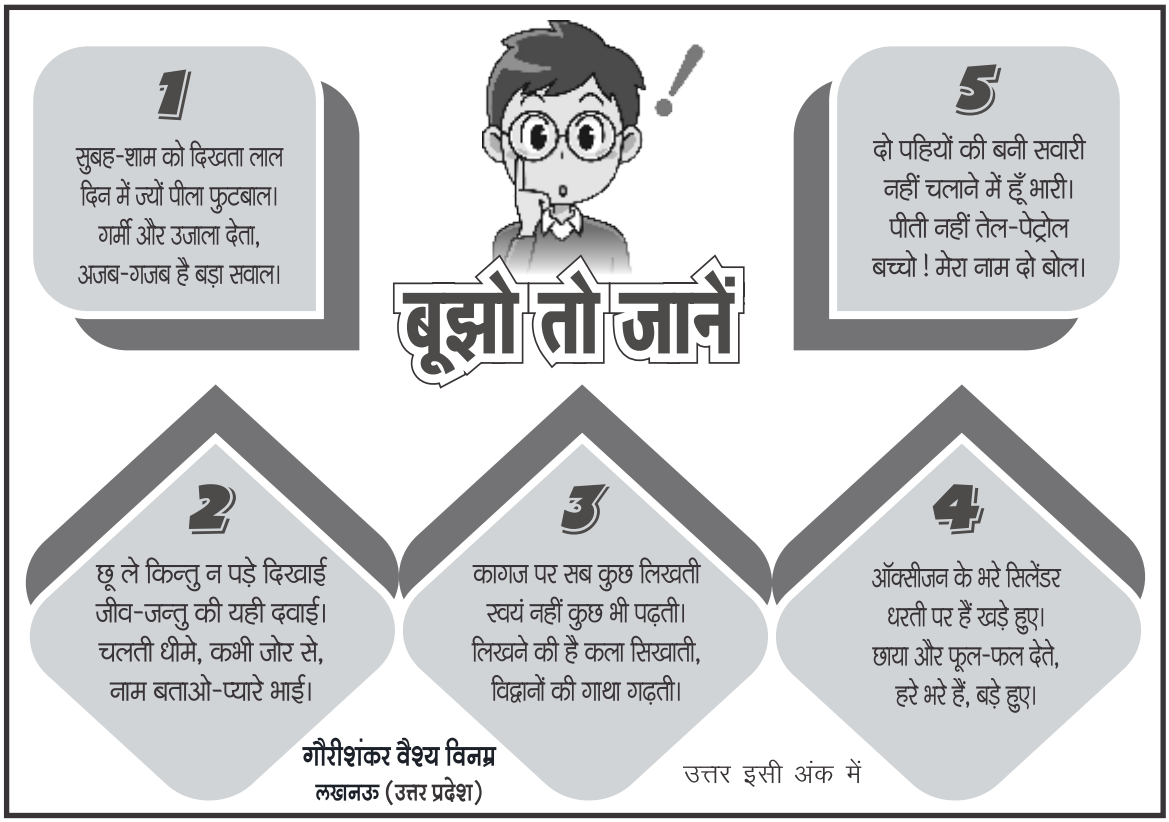

बूझो तो जानें

1

सुबह-शाम को दिखता लाल
दिन में ज्यों पीला फुटबाल।
गर्मी और उजाला देता,
अजब-गजब है बड़ा सवाल।

5

दो पहियों की बनी सवारी
नहीं चलाने में हूँ भारी।
पीती नहीं तेल-पेट्रोल
बच्चो ! मेरा नाम दो बोल।

2

छू ले किन्तु न पड़े दिखाई
जीव-जन्तु की यही दवाई।
चलती धीमे, कभी जोर से,
नाम बताओ-प्यारे भाई।

3

कागज पर सब कुछ लिखती
स्वयं नहीं कुछ भी पढ़ती।
लिखने की है कला सिखाती,
विद्वानों की गाथा गढ़ती।

4

ऑक्सीजन के भरे सिलेंडर
धरती पर हैं खड़े हुए।
छाया और फूल-फल देते,
हरे भरे हैं, बड़े हुए।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

उन्होंने दोनों को घोंसले से बाहर जाते देखा तो उनके बच्चों पर धावा बोल दिया। उसे रोता देखकर पेड़ पर बैठे पीकू कबूतर से न रहा गया। उसने पूछा– "क्या हुआ? तुम इतने दुःखी क्यों हो?" चंची ने रोते हुए उन्हें आपबीती सुना दी।

"तुम इस वन में नए आए हो। तुमने पहला वन क्यों छोड़ा?" उसने पूछा तो टिक्कू ने सही बात बता दी। "तुम्हें जिन्दगी में इतना बुरा सबक मिल गया। अब अपने स्वभाव को सुधारकर सबसे साथ मिलकर रहना।" "तुम ठीक कहते हो। हमारे बच्चों की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जाएगी। हम जल्दी ही फिर से घोंसला बनाकर अंडे और बच्चों का इन्तजार करेंगे और सबके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।" टिक्कू बोला। उनकी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। अपने बुरे स्वभाव की इतनी बड़ी सजा की उन्होंने कभी उम्मीद नहीं की थी।

डॉ. कुसुम रानी नैथानी
देहरादून (उत्तराखण्ड)

'दुनिया का सबसे बड़ा ताला' पृष्ठ 22 का शेष....

नोक एप को एंड्रॉयड और आईओएस स्मार्टफोन पर डाउनलोड करना होगा। ब्लूटूथ से ताला और फोन जुड़ जाते हैं। ताला खोलने के लिए बार–बार एप चलाने की जरूरत नहीं होगी, सिर्फ ब्लूटूथ ऑन रखना होगा। खोलने के लिए इसे छूना होगा, ताला स्पीड मोड से बाहर जाएगा। फोन सर्च होते ही ताला अपने आप खुल जाएगा। इस ताले में और भी कई खूबियाँ हैं। हार्ड स्टील और बोरॉन मटैरियल से बना होने से इसे काटा नहीं जा सकता। यह वॉटरप्रूफ है यानी पानी के अन्दर जाने से ताले के खराब होने का कोई खतरा नहीं। इसकी बैटरी एक साल तक चलेगी। बैटरी लो होने पर एप अलर्ट रहेगा। कई यूजर्स रजिस्टर हो सकते हैं जिन्हें इसे खोलने की अनुमति होगी। ताला कब खुला, किसने खोला, रिकॉर्ड मास्टर यूजर्स के पास रहेगा।

किरण बाला
मन्दसौर (मध्य प्रदेश)

विश्व कविता दिवस
21 मार्च

हृदय की भाष

कविता क्या है ?

सरल शब्दों में उपयुक्त भाषा–शैली व कौशल के द्वारा मनोभाव को प्रकट करने वाली रचना को कविता कह सकते हैं। कविता संवेदनाओं को पुष्ट करती है, प्रेरणाा जगाती है और मनोरंजन भी करती है। कविता उस विषय या वस्तु के प्रति ज्ञान भी बढ़ाती है। कविता के निर्माण में मन और मस्तिष्क दोनों का योग होता है।

कविता से बालक का रिश्ता बचपन से ही जो जाता है, जब माँ बच्चे को सुलाने के लिए लोरी गाकर सुनाती है। कभी प्रातः जागरण के लिए प्रभाती के स्वर भी प्रेरित करते हैं। विद्यालय में प्रार्थना व कविता के माध्यम से ही शिक्षा का शुभारंभ होता है। व्यक्ति जीवन पर्यन्त कविता से जुड़ा रहता है। हर उम्र के अनुसार उसकी रुचि बदलती रहती है। युवकों को फिल्मी गीत, गजल, शेरो–शायरी पसन्द आती है तो वरिष्ठजनों को भजन, आरती आदि से लगाव हो जाता है।

प्रसिद्ध काव्य पुस्तकें

हमारे प्राचीन ग्रंथ रामायण, महाभारत, गीता सभी कविताओं में रचित हैं। छंद युक्त काव्य के अनेक स्वरूप हैं, जैसे दोहा, मुक्तक, सोरठा, रोला कुंडली, कविता, गीत, गजल आदि। तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास, केशवदास बिहारी का समूचा साहित्य छंदबद्ध कविता के रूप में मिलता है। हिन्दी भाषा में जयशंकर प्रसाद की कामायनी, मैथिलीशरण गुप्त की साकेत, महादेवी वर्मा की नीहारिका, सुमित्रानन्दन पंत की चिदम्बरा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की जूही की कली, रामधारी सिंह दिनकर की उर्वशी आदि पुस्तकें विश्व विख्यात हैं।

साहित्य की समस्त विधाओं में कविता का एक विशिष्ट स्थान है। अपने मन की बात को कहने के लिए यह सबसे सुंदर और आकर्षक माध्यम एवं साधन है। कविता की प्रस्तुति उतार–चढ़ाव, लय, राग व हाव–भाव से होती है अतः यह श्रोताओं और पाठकों पर प्रभावी छाप छोड़ती है।

हिन्दी कविता का प्रारम्भ

हिंदी कविता की यात्रा के विकास का लम्बा इतिहास है। कविता की प्रवृत्तियों के अनुसार कविता को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के रूप में बाँटा गया। कविता के बाह्य रूप को लेकर कविता को दो प्रकार की कह सकते हैं। छंद में लिखी कविता और छंद के बिना लिखी मुक्त छंद की कविता। छंद बद्ध कविता में हर पंक्ति में वर्णों और मात्रा का एक नियम से प्रयोग किया जाता है। लेकिन, मुक्त छंद कविता में वर्णों और मात्रा का बंधन नहीं होता। हाँ, लय का होना जरूरी माना जाता है। छंद में रचित कविता में लय स्वतः बाहरी तौर पर सीधे अनुभव होता है। छंद विहीन कविता में बाहरी तौर पर लय नहीं दिखाई देती, लेकिन उसमें आन्तरिक लय व भाव की निरन्तरता होती है। अब हम आपको दोनों प्रकार की कविता को उदाहरण दे कर परिचय करा देते हैं।

कविता के प्रकार

छंद युक्त कविता के उदाहरण स्वरूप 'श्यामलाल पार्षद' द्वारा रचित 'झंडा–गीत' के कुछ काव्यांश को लेते हैं :–

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

षा है कविता

सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला,
मातृभूमि का तन–मन सारा।। झंडा...।
स्वतन्त्रता के भीषण रण में,
लखकर बढ़े जोश क्षण–क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में,
मिट जाए भय संकट सारा।। झंडा...।

उक्त कविता में, छंद में लिखी हुई कविता के सभी नियम और काव्य सिद्धांतों की पालना हुई है। छंद के अनुसार मात्रा को ध्यान में रखकर वर्णों का प्रयोग है। साथ ही लय और तुक भी बाहरी तौर पर अनुभव होते हैं। इन सभी उपकरणों से कविता की प्रस्तुति गाने योग्य होने से श्रोता एवं पाठकों को बाँधे रखने में समर्थ होती है।

दूसरे प्रकार की कविता छंद विहीन कविता लेते हैं। इस हेतु प्रसिद्ध कवि अज्ञेय की कविता 'साँप' को समझते हैं–

साँप !
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ––(उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना––
विष कहाँ से पाया?

कविता दिवस : कब और क्यों

यूनेस्को विश्व के समस्त देशों के लिए शिक्षा, विज्ञान और सांस्कृतिक परम्पराओं की स्थापनाओं और उनकी भविष्य में सुदृढ़ स्थिति को बनाए रखने के लिए काम करने वाला एक विश्व स्तरीय संगठन है। यूनेस्को ने पहली बार 1999 में पेरिस में होने वाले 30 वें आम सम्मलेन में यह तय किया कि 21 मार्च को विश्व कविता–दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस दिवस पर कविताओं की प्रस्तुति से विश्व की उन समस्त भाषाओं को सुनने–पढ़ने का अवसर मिलेगा जो भाषाएँ विलुप्त होने की संभावना रखती है। साथ ही, कविताओं से विभिन्न संस्कृतियों को भी बढ़ने का अवसर मिलेगा।

विश्व कविता दिवस का उद्देश्य

विश्व कविता दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य कविताओं का प्रचार– प्रसार करना है। इस दिन के माध्यम से नए लेखकों एवं प्रकाशकों को प्रोत्साहित किया जाता है। कविताओं के लेखन और पठन दोनों का ही संतुलन बना रहे इसलिए भी इस दिवस को मनाने का निर्णय लिया गया। कविताओं का भूत बहुत स्वर्णिम रहा है और वर्तमान और भविष्य भी इसी ओर गतिमान रहे इसलिए भी विश्वभर में विभिन्न देशों में इस दिन को गर्व के साथ मनाया जाता है।

ऐसे मनाया जाता है

विश्व कविता दिवस पर तरह–तरह के आयोजन होते हैं। इसके लिए प्रमुख शहरों में समारोह आयोजित किये जाते हैं जिसमें कविगण कविता पाठ करते हैं, पुराने कवियों को याद किया जाता है। पाठक अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हैं। प्रकाशक कवि और उनकी कविता, किताब आदि से जुड़े अनुभवों को बताते हैं। कई जगहों पर तो कविता की पुस्तकों का विमोचन भी होता है।

उक्त रचना में कविता के छंद आदि बाहरी उपकरणों का प्रयोग नहीं हुआ है। लेकिन कवि ने बौद्धिकता एवं पूरी कलात्मकता के साथ अपनी बात कही है। कवि ने 'साँप' के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत किया। साँप महानगर में नहीं बसा फिर भी वह महानगर में रहने वाले लोगों की तरह ही संवेदना से हीन कैसे हो गया? वहाँ के लोगों को दूसरों के दुख–दर्द से कोई लेना–देना नहीं। वे अपना निजी हित साधने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। इस स्थिति की ओर कविता में संकेत किया गया है।

समकालीन समय में कविता ने सादगी को ओढ़ लिया है। लेकिन कविता का प्रभाव जस का तस बना हुआ है। इस सादगी के लिए लेखक की कविता "सावन का अंधा" उदाहरण के रूप में देखिए–

कोयल! तुम अमराई में रहकर
अमराई से मद भरे गीत गाती हो
या, हरे–हरे नीम की
पकी–पकी निंबोरियों से रखती हो प्रीत
परन्तु, नहीं करती हो
उन पेड़ों की बात
जो रोज–रोज उतारे जा रहे हैं
मौत के घाट क्योंकि
तुमने कभी नहीं भोगा है
वेदना का क्षण
इसीलिए तुम्हारी बोली में
रस भर–भर कर छलक आता है
ज्यों सावन के अंधे को हरा ही हरा
नजर आता है।

हम आप से अपेक्षा करते हैं कि कविता के सभी प्रकार के स्वरूपों को समझें और जुड़ें। अपनी सृजन–शक्ति का विकास करें। हो सके तो आप मन की बात कविता में कहें।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
कांकरोली (राजस्थान)

आओ पढ़ें : नई किताबें

इस पुस्तक की 23 कहानियाँ बच्चों के लिए सीख और मनोरंजन का खजाना है। ये कहानियाँ विभिन्न प्रकार की है जिससे पढ़ने में रुचि बनी रहती है। दैनिक जीवन की सामान्य घटनाओं पर रचित व कल्पित इन कहानियों में अनेक जीवन मूल्यों का समावेश हुआ है। कहानियों की भाषा सरल व सुबोध है। सुन्दर आवरण व चित्रों से सजी इस पुस्तक का मुद्रण अच्छा है।

पुस्तक का नाम : जादुई बगीचा **लेखक :** उषा सोमानी
मूल्य : 200 रुपये **पृष्ठ :** 119 **संस्करण :** 2021
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर (राजस्थान)

बाल कहानी व उपन्यास लेखन में समीर गांगुली की दक्षता व सृजनशीलता सर्वज्ञात है। प्रस्तुत पुस्तक में शेयर मार्केट जैसे कठिन व जटिल विषय को अत्यधिक रोचक रूप में ऐसे नवीन कल्पनाशील कथानक में रचा है कि विषय भी स्पष्ट हो गया और बोझिल भी नहीं लगा। रंगीन चित्रों से सजा, 14 अध्यायों में विभाजित यह उपन्यास ज्ञानवर्द्धक एवं पठनीय है।

पुस्तक का नाम : मायावन और धन धनाधन **लेखक :** समीर गांगुली
मूल्य : 125 रुपये **पृष्ठ :** 57 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

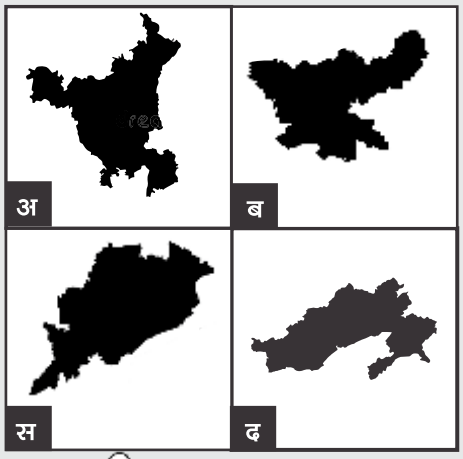

दस सवाल दस जवाब

(1) मानचित्र के आधार पर भारत के इन राज्यों को पहचानियें।

(2) वर्तमान भारत में कितने राज्य एवं केन्द्रशासित प्रदेश है?

(3) विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा भारत के किस राज्य में है?

(4) केरल की राजधानी कहाँ है?

(5) भारत का कौन सा राज्य जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा है?

(6) कन्याकुमारी किस राज्य में है?

(7) भारत के किन सात राज्यों को 'सेवन सिस्टर्स' कहा जाता है?

(8) क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा और सबसे छोटा राज्य कौनसा है?

(9) किस राज्य से गंगा नदी का उद्गम होता है?

(10) हैदराबाद किन दो राज्यों की राजधानी है?

उत्तर इसी अंक में

- मरीज : डॉक्टर साहब! मुझे बचा लीजिए। मैं आपके परिवार के लिए मुफ्त काम करूँगा।
  डॉक्टर : ठीक है भाई। लेकिन तुम काम क्या करते हो?
  मरीज : जी, कब्रिस्तान में कब्र खोदने का।

- पुत्र : पिताजी, बाहर कोई आपको आवाज दे रहा है।
  पिता : कौन है ?
  पुत्र : कोई मूँछों वाला है।
  पिता : कह दे, हमें नहीं चाहिए।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

मै किसी कर्मकाण्ड में विश्वास नही करती मैं मुक्ति को नहीं, इस धूल को अधिक चाहती हूँ।

❖

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण है जो साहस के साथ उनका सम्मान करते हैं।

❖

एक निर्दोष के प्राण बचाने वाला असत्य उसकी हिंसा का कारण बनने वाले सत्य से श्रेष्ठ होता है।

❖

जीवन में कला का सच, सुन्दरता के माध्यम से व्यक्त किये गये सच से बेहतर होता है।

महादेवी वर्मा

सुबह हुई

अब क्या सोना, उठ जाओ,
भोर हुई, शाला जाओ।
सूरज आकर के बोला,
जीवन में चलते जाओ।

पंछी उठकर चहक रहे,
पुष्प सुगन्धित महक रहे।
तुम ना जागे हो अब तक
बन्द तुम्हारे पलक रहे।

शीतल–शीतल पवन बहा,
कान में आकर ये कहा।
उठ जाओ, आलस त्यागो,
जल्दी उठकर रोज नहा।

डॉ. अलका अग्रवाल
जयपुर (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

मीकू की शैतानी

अक्षज बहुत खुश था। उसे कल अपनी मम्मी के साथ हवाई जहाज में बैठकर गुवाहाटी जाना था। गुवाहाटी में उसके पापा उन्हें लेने आने वाले थे। उसके पापा आर्मी में कैप्टन थे। उनकी पोस्टिंग नेफा में थी। अक्षज और उसकी मम्मी को केवल दो महीने के लिए बेस कैंप में जाने की अनुमति मिली थी। जैसे ही अक्षज के पापा उन्हें हवाई अड्डे पर लेने आए, अक्षज खुशी के मारे उनसे लिपट गया। आर्मी जीप में उसके पापा उन्हें बेस कैंप में लेकर गए।

वहाँ उनका तीन कमरों का सुन्दर सा बंगला था। अक्षज को कुछ दिन तो बहुत अच्छा लगा। उसने अपने पापा को साल भर की गतिविधियों, स्कूल व दोस्तों की खट्टी–मीठी बातों से अवगत कराया। वह उनके साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करता था। वहाँ वह चारों तरफ हरियाली तथा सुन्दर–सुन्दर बाग–बगीचे देखकर खुश होता था। उसके मम्मी–पापा भी उसके साथ अधिक से अधिक समय बिताने का प्रयास करते थे। यहाँ केवल तीन परिवार रहने के लिए आए हुए थे। किन्तु उनके साथ बच्चे नहीं थे। इसलिए बच्चों की संगति न मिलने पर अक्षज अकसर उदास हो जाता था। वह अपने दोस्तों पप्पू, मिंटू तथा लवली को यहाँ बहुत मिस करता था।

एक दिन उसकी मम्मी दोपहर को रसोई में खाना पकाने में व्यस्त थी। अक्षज आँख बचाकर घर से बाहर दूर निकल आया। वह अकेला इधर–उधर पेड़ों के झुरमुट के बीच में घूमता रहा। कभी कहीं से पत्ते हिलने की आवाज आती तो वह घूम कर देखता, गिलहरी उछल–कूद कर रही है, तब वह ताली बजाने लगता। कहीं चिड़ियों की चहचहाहट थी, तो कहीं तरह–तरह के कीट–पतंगों की भीं–भीं की आवाज आ रही थी। कुछ देर वह तितलियों के पीछे इधर–उधर भागता रहा। आखिर में वह थक गया और एक पेड़ के नीचे तने का सहारा लेकर बैठ गया। अचानक उसे पेड़ की शाखाएँ हिलती नजर आई। उसकी साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। उसने ऊपर देखा तो वह बुरी तरह डर गया।

वहाँ पर एक बन्दर बैठा था। वह सतर्क हो गया। अक्षज की अब तो सिट्टी–पिट्टी गुम हो गई। वह पछता रहा था वह मम्मी को बिना बताएँ यहाँ क्यों आ गया? अब तो यह बन्दर अवश्य ही मुझ पर झपटेगा, मैं दौड़ूँगा तो यह भी मुझे काटने के लिए दौड़ेगा। अब मैं कैसे बचाव करूँ? वह सोचने लगा। तभी उसने देखा कि बन्दर उसे एकटक चुपचाप देखे जा रहा है। कुछ देर बाद हिम्मत जुटाकर वह बन्दर की ओर देखकर मुस्कुरा दिया। बन्दर भी खीं–खीं दाँत निकाल कर हँस दिया। अब तो अक्षज का भी हौसला

बढ़ गया। उसने बन्दर को अपने पास बुलाने का इशारा किया। बन्दर झट से पेड़ से उतर कर उसके पास आकर बैठ गया। अब अक्षज को उससे बिलकुल डर नहीं लग रहा था। वह कुछ देर उसके पास बैठा रहा। अक्षज ने हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा– "मैं तुम्हें मीकू बुलाऊँ क्या?" मीकू ने तुरन्त हाथ आगे बढ़ा दिया। कुछ देर बाद अक्षज घर वापस लौट आया।

अब तो यह उसका नियमित कर्म बन गया था। वह मम्मी की नजर चुरा कर वहाँ पेड़ों के झुरमुट में जाने लगा, क्योंकि अब वहाँ पर मीकू था। मीकू से अब उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। मीकू ने उसके लिए पेड़ से अमरूद तोड़ कर गिराये और फिर नीचे उतर कर उसके साथ बैठकर खुद भी खाए। अक्षज अब प्रसन्नचित्त रहने लगा।

एक दिन वह अपनी बॉल ले आया। उसने बॉल को मीकू की तरफ उछाला तो मीकू ने उसे अपने हाथ में पकड़ लिया। फिर मीकू ने बॉल अक्षज की ओर उछाली। इस तरह उन्हें खेल में मजा आने लगा। अक्षज घंटों बैठकर मीकू के साथ पता नहीं क्या–क्या बातें करता रहता। मीकू चुपचाप ऐसे सुनता जैसे वह सब कुछ समझ रहा हो।

एक दिन अक्षज की मम्मी को संदेह हुआ। जैसे ही अक्षज बाहर खेलने के लिए निकला तो उसकी मम्मी उसके पीछे–पीछे चली आईं। वह छिपकर देखने लगी। अक्षय को मीकू के साथ दोस्त की तरह खेलते तथा बातें करते देख वह आश्चर्यचकित रह गई। उसे डर लगा कि कहीं बन्दर उसे नुकसान न पहुँचा दे, आखिर है तो यह जानवर ही। और जैसे ही वह अक्षज को पकड़कर अपने साथ ले जाने लगी, तो मीकू उनकी ओर लपका। अक्षज ने मम्मी को कहा– "मम्मी थोड़ी देर और खेलने दो। मीकू मेरा अच्छा दोस्त है, वह मुझे कुछ नहीं कहेगा... आप डरो मत...।"

अक्षज के आश्वासन पर उसे कल फिर खेलने के लिए कहकर वह उसे वापस ले आई। सचमुच में मीकू और अक्षज अब पक्के दोस्त बन गए थे और एक दूसरे की भावनाओं को अच्छी तरह समझने लगे थे। एक दिन अक्षज जब देर शाम सूरज ढलने तक पेड़ों के झुरमुट के पास नहीं पहुँचा, तब मीकू उदास हो गया। वह उसके बंगले की तरफ चला आया। वहाँ उसने अक्षज को बड़े मजे से टेलीविजन पर कार्टून फिल्म देखते हुए देखा। मीकू ने अक्षज को बाहर आने का इशारा किया, परन्तु अक्षज मजे लेकर कार्टून फिल्म देखने में मगन था। इस पर मीकू को गुस्सा आया। उसने दो–तीन बार अक्षज की ओर घूर पर देखा और दाँत दिखाए परन्तु अक्षज ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मीकू नाराज हो गया और वापिस लौट गया।

अगले दिन फिर से अक्षज फिल्म देखने में व्यस्त रहा। मीकू फिर से उसके बंगले पर आया। वह अक्षज के कमरे में आकर उसकी शर्ट खींचने लगा तो अक्षज ने उसे झिड़क दिया। इस पर मीकू को गुस्सा आया। उसने सोचा– ''अक्षज आजकल टीवी में घुसा रहता है, मेरे साथ खेलने नहीं आता।'' मीकू ने अपना दिमाग लगाया कि उसे कैसे मजा चखाया जाए? वह छत पर उछल–कूद करने लगा। वहाँ पर उसने टाटा स्काई की गोल छतरी देखी तो वह उस पर जाकर बैठ गया। फिर वह जोर–जोर से उछलने लगा। अक्षज को कमरे की छत पर धम्म–धम्म अच्छी नहीं लगी और वह परेशान हो उठा। यह क्या? कुछ ही देर में सिगनल भी गायब हो गया और टीवी का ट्रांसमिशन बन्द हो गया था। वह रूम से बाहर आया।

अक्षज को बहुत गुस्सा आया। मजेदार सीन चल रहा था। उसने सोचा– ''शायद लाइट चली गई है। किन्तु लाइट तो है, फिर यह टीवी का सिगनल क्यों नहीं आ रहा?'' "मम्मीजी! देखो न प्लीज! कितनी अच्छी कार्टून फिल्म चल रही थी। मुझे बहुत मजा आ रहा था। मुझे लगता है छत पर कोई है, चलो देखते हैं।" अक्षज ने मम्मी से आग्रह किया।

उसकी मम्मी ने ऊपर झाँका तो हैरान रह गई। जल्दी से अक्षज को आवाज लगाई। अक्षज ने देखा मीकू टाटा स्काई की छतरी पर बैठकर एंटीना को जोर–जोर से हिला रहा है। मीकू अक्षज को बाहर आया देखकर खीं–खीं दाँत दिखाने लगा, मानो उसे चिढ़ा रहा हो। अब अक्षज की समझ में आया। वह दो

देखें पृष्ठ 36....

व्हाट्सएप कहानी

कल दोपहर मैं बैंक में गया था। वहाँ एक बुजुर्ग भी अपने काम से आये थे। वहाँ वह कुछ ढूँढ़ रहे थे। मुझे लगा शायद उन्हें पेन चाहिये। इसलिए उनसे पूछा तो, वह बोले– '"बीमारी के कारण मेरे हाथ काँप रहे हैं और मुझे पैसे निकालने की स्लीप भरनी है। उसके लिए मैं देख रहा हूँ कि कोई मदद कर दे।" मैं बोला– "आपको कोई हर्ज न हो तो मैं आपकी स्लीप भर देता हूँ।"

उन्होंने मुझे स्लीप भरने की अनुमति दे दी। मैंने उनसे पूछकर स्लीप भर दी। रकम निकाल कर उन्होंने मुझ से पैसे गिनने को कहा, मैंने पैसे भी गिन दिये। हम दोनों एक साथ ही बैंक से बाहर आये तो, बोले "सॉरी तुम्हें थोड़ा कष्ट तो होगा परन्तु मुझे रिक्शा करवा दो। इस भरी दोपहरी में रिक्शा मिलना बड़ा कष्टकारी होता है।" मैं बोला– "मुझे भी उसी तरफ जाना है, मैं आपको कार से घर छोड़ देता हूँ।"

वह तैयार हो गये। हम उनके घर पहुँचे। बड़े प्लाट पर बना हुआ घर क्या बंगला कह सकते हो। घर में उनकी वृद्ध पत्नी थी। वह थोड़ी डर गई कि इनको कुछ हो तो नहीं गया जिससे उन्हें छोड़ने एक अपरिचित व्यक्ति घर तक आया हैं। फिर उन्होंने पत्नी के चेहरे पर आये भावों को पढ़कर कहा कि– "चिन्ता की कोई बात नहीं, यह मुझे छोड़ने आये हैं।" फिर बातचीत में वह बोले– "इस भगवान के घर में हम दोनों पति–पत्नी ही रहते हैं। हमारे बच्चे तो विदेश में रहते हैं।"

मैंने जब उन्हें 'भगवान के घर' के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि– "हमारे परिवार में भगवान का घर कहने की पुरानी परम्परा है। इसके पीछे भावना हैं कि यह घर भगवान का है और हम उस घर में रहते हैं। जबकि लोग कहते हैं कि "घर हमारा है और भगवान हमारे घर" में रहते हैं।"

मैंने विचार किया कि दोनों कथन में कितना अन्तर है? फिर वे बोले– "भगवान का घर बोला तो अपने से कोई गलत कार्य नहीं होते और हमेशा सद्विचारों से भरे रहते हैं।" बाद में मजाकिया लहजे में बोले– "लोग मृत्यु उपरान्त भगवान के घर जाते हैं परन्तु हम तो जीते जी ही भगवान के घर का आनन्द ले रहे हैं।"

यह वाक्य ही जैसे भगवान का दिया कोई प्रसाद ही है। भगवान ने ही मुझे उनको घर छोड़ने की प्रेरणा दी। "घर भगवान का और हम उनके घर में रहते हैं।" यह वाक्य बहुत दिनों तक मेरे दिमाग में घूमता रहा, सही में उन सज्जन के कितने अलग और अच्छे विचार थे।

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

7		1	3		9			5
					1	6		4
5		4				7		
							1	
8		7	6		4	9		
	1		5			3		6
		3		6	5		8	7
	5					1		
			8	3				9

उत्तर इसी अंक में

गाँव पटवा टोली : पूरा गाँव आईआईटियन की टोली

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है और जो इस बात को समझ लेता है वही आगे बढ़ता है। बिहार के गया जिले में मुरारपुर के पास स्थित गाँव पटवा टोली के लोगों ने इस बात को आत्मसात करते हुए बुनकरों के इस गाँव को आईआईटियन हब बना डाला।

बिजली गुल तो मिला अच्छा विकल्प – बुनकरों के इस गाँव में अकसर बिजली गुल होने से कपड़ा उद्योग पर असर पड़ने लगा था। इसी बीच 1992 में एक बुनकर के बेटे जितेंद्र सिंह ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई आई टी) में सफलता पाई तो बच्चों को अंधकारमय भविष्य से बचाने का ये रास्ता लोगों के सामने आया। पटवा टोली के लोग कई पीढ़ियों से कपड़ा उद्योग से जुड़े हैं। गाँव में घुसते ही आज भी रंगीन धागों की डाई की महक, करघों की तेज आवाज आदि सुनाई दे सकती है। किसी समय यहाँ के लोगों का मुख्य और एकमात्र व्यवसाय बुनाई ही हुआ करती थी लेकिन आज पूरी तरह से गाँव का परिदृश्य बदल चुका है। एक तरफ कपड़े की बुनाई तो दूसरी ओर छात्रों को आईआईटी बनाकर यहाँ के लोगों ने सच में कमाल कर दिया है।

विकिपीडिया पर भी मिली अलग पहचान – अब तो विकिपीडिया पर भी इस गाँव के परिचय में बुनकर के साथ आई आई टी लिख दिया गया है। ये इस गाँव की बड़ी सफलता है कि उसने लोगों के तन ढकने के साथ–साथ देश की नींव को मजबूत करने के लिए आईआईटी छात्रों का उत्पादन भी करना शुरू कर दिया। गाँव को रोल मॉडल बनते देर नहीं लगी। जितेंद्र ने कपड़ा उद्योग के अलावा भी एक नया सपना यहाँ के लोगों को दिया।

घर–घर में इंजीनियर – बुद्धिमत्ता के गढ़ बिहार के गया के इस गाँव में आलम यह है कि हर घर में कम से कम एक इंजीनियर तो है ही। ये गाँव अब तक तीन सौ से अधिक आई आई टी छात्रों का भविष्य बना चुका है। जबकि यहाँ कई बुनियादी सुविधाओं का अब भी अभाव है। यहाँ के हर घर से बच्चे आईआईटी में चुने जाते हैं। बताया जाता है कि यह सिलसिला 1996 से चल रहा है। यहाँ हर साल करीब 10–12 बच्चे आईआईटी की प्रतियोगिता परीक्षा पास करते हैं और फिर वहाँ पढ़ाई करते हैं।

बिना बाहरी मदद करते हैं पढ़ाई– हैरानी की बात यह है कि यह बच्चे बिना कोचिंग लिए अपनी पढ़ाई करते हैं और परीक्षा देकर पास हो जाते हैं। बच्चों की मदद के लिए गाँव में एक समृद्ध लाइब्रेरी भी है जिसे यहाँ के युवा ही चला रहे हैं। इस लाइब्रेरी में किताबें पढ़ने या यहाँ बैठकर अध्ययन के लिए बच्चों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता। बच्चों को गाइड करने के लिए गाँव के ही युवा ऑनलाइन क्लासेज भी ले रहे हैं।

जाहिर सी बात है बच्चो, अगर हम जिद पकड़ लें तो जिन्दगी में आगे बढ़ने के बहुत सारे रास्ते हैं जिनमें से कोई भी हम चुन सकते हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

मस्ती की पाठशाला

अजयसर गाँव के तालाब की पाल के किनारे बड़े से खेत के चारों ओर खूब सारे बेर और नीम के पेड़ों पर बहुत से पक्षी व कई अन्य जीव बड़े प्रेम से रहते थे। कालू कौआ, जूही गिलहरी, लाली बुलबुल, चमकू चिड़िया, हैरी तोता व मिनि मैना भी वहाँ अपना घोंसला बनाकर सबके साथ खूब मजे से रहते थे। एक दिन जूही गिलहरी अपने चारों पंजो को फैला पेड़ की डाली पर ऐसे लेटी हुई थी मानो बेहोश हो, तभी हैरी तोते की नजर उस पर पड़ी।

"जूही–जूही क्या हुआ तुम ऐसे क्यों लेटी हो?" हैरी के बार–बार पूछने पर भी जब जूही ने कोई जवाब नहीं दिया तो हैरी तुरन्त जा अपने सभी साथियों को उसी पेड़ पर ले आया। आते ही सभी ने समवेत स्वर में जूही को आवाज लगाई। इतनी जोर की आवाज सुन जूही तुरन्त हैरान होते हुए बोली– "अरे! तुम सारे यहाँ कैसे?" "कैसी बात करती हो जूही, मेरे इतनी आवाज लगाने पर भी जब तुम नहीं उठी तो मुझे बहुत चिन्ता हो गई और मैं सबको यहाँ बुला लाया।"

हैरी तोते ने तुरन्त जवाब दिया। "ओह! जूही ऐसी क्या बात है जो तुम इतनी परेशान हो, हमें नहीं बताओगी।" चमकू चिड़िया जूही के एकदम करीब बैठते हुए बोली। "कुछ नहीं दोस्तो, आज ही मम्मी पापा मेरा स्कूल में एडमिशन करवा कर आए हैं और तुम्हें तो पता ही है मुझे पढ़ाई बिलकुल अच्छी नहीं लगती, बस इसीलिए थोड़ा परेशान थी।" उदास होते हुए जूही ने सारी बात बताई। वहाँ खड़े कालू, लाली, चमकू, हैरी व मिनी सबने हैरानी से एक दूजे को देखा और आँखों ही आँखों में एक दूजे को इशारा कर सब जूही को पकड़ नदी किनारे ले गए।

कालू कौआ चिल्लाते हुए बोला– "आओ, आज हम सब नदी किनारे खूब मस्ती करेंगे।" यह सब सुनते ही जूही खूब उछल–उछल कर इधर से उधर भागने लगी। पहले से ही नदी किनारे चश्मा लगाकर बैठे हाथी दादा को मिनी ने चुपचाप सब बात बता दी थी। सब सुनते ही हाथी दादा बोले– "आओ बच्चो! अब हम फिर वही गानों वाले खेल खेलेंगे।" "गानों वाले खेल। यह कौनसे खेल होते हैं।" जूही ने पास मैं खड़ी चमकू को हिलाते हुए धीरे से पूछा। "हाथी दादा जैसा–जैसा कह रहे हैं, बस वैसा–वैसा करती जाओ, सब अपने आप समझ आ जायेगा।" चमकू ने जूही को समझाया।

तभी हाथी दादा ने गाना शुरू किया–

'अ से अनार हम खायेंगे, आओ बच्चो तुम सारे'

'ब से बतख के बच्चे देखो, पानी में लगते प्यारे'

"प्यारे बच्चो! चलो सब इस गाने को गाओ और जल्दी से दौड़ लगाओ। जो सबसे पहले अनार के पेड़ को छू लेगा उसे एक अनार इनाम में मिलेगा।" इतना सुनते ही सबने पेड़ की तरफ दौड़ लगा दी। "अरे वाह! आज तो जूही प्रथम आई है और उसे दिया जाता है यह सुन्दर सा लाल–लाल अनार।" हाथी दादा ने जूही को इनाम में अनार दिया और सभी ने जोर–जोर से ताली बजाई।

हाथी दादा ने फिर पूछा– "अ से...।" तो सभी बच्चों के साथ जूही भी बोली– "अनार।" "आओ अब सब फिर से गायेंगे" 'ब से बतख के बच्चे देखो, लगते पानी में प्यारे' 'आ से आज करेंगे गिनती, यह तो हैं कितने सारे।''

इतना सुनते ही सब जल्दी–जल्दी बतख के बच्चों को गिनने लगे। जूही को अभी गिनती आती नहीं थी, लेकिन उन सबको देख वह भी वैसा ही करने की कोशिश करने लगी। यह सब करने में उसे बहुत मजा आ रहा था। "1,2,3,4,5 सर पाँच बच्चे हैं बतख के।" हैरी तोता सबसे पहले बोला। "आज का दूसरा इनाम दिया जाता है हैरी को।" हाथी दादा के इतना कहते ही सब बच्चों ने जोरदार ताली बजाई।

इनाम में मिली मिर्ची को देख हैरी के मुँह में पानी आ गया। वह झटपट सारी मिर्ची को लेकर पेड़ की डाली पर जा बैठा। हाथी दादा ने बच्चों से फिर पूछा– "बच्चो बताओ, आज हमने क्या सीखा?" कालू कौआ फटाफट बोला– "सर अ से अनार, ब से बतख, आ से आज और 1, 2, 3, 4, 5 तक गिनती।" "अ से अनार, ब से बतख, आ से आज, 1,2,3,4,5 गिनती। यह सब हमने कब सीखा?" जूही हैरान होते हुए बोली। "यह सब हमने आज ही सीखा और देखो यह सब तुम भी सीख गई।" लाली जूही की पीठ थपथपाते हुए बोली।

"यही तो हमारी मस्ती की पाठशाला है, जहाँ खेल का खेल व पढ़ाई की पढ़ाई।" मिनी बुलबुल ने तुरन्त अपने मन की बात कही। "यहाँ तो मैं रोज आऊँगी और जल्दी से विद्वान बन जाऊँगी।" जूही के इतना कहते ही अब तक पेड़ पर डाली के झुरमुट में छिपे बैठे जूही के मम्मी पापा झट नीचे उतर आये और बोले– "हमने तुम्हारा एडमिशन इसी मस्ती की पाठशाला में करवाया है।"

'अ से अनार हम खायेंगे, आओ बच्चो तुम सारे'
'ब से बतख के बच्चे देखो, पानी में लगते प्यारे'
'आ से आज करेंगे गिनती, यह तो हैं कितने सारे'
जूही के साथ सभी यह गीत गा–गा कर नाचने लगे।

अनीता गंगाधार शर्मा
अजमेर (राजस्थान)

दिवस रैन यह चलता
कभी न थकता सूरज,
दूर रहे हमसे तम
खुद ही जलता सूरज।

पास न आना सूरज
दूर–दूर बतियाना,
धूप सा गुनगुनाना
किरणों से नहलाना।

सबके दुःख हरते हो
अपनी कब कहते हो,
थोड़ा सा सुस्ता लो
चलते ही रहते हो।

तुमसे सीखा हमने
चलना ही जीवन है,
चले जो अंगारों पर
खिलता वह उपवन है।

सूरज से सीखा

नलिन खोईवाल
इंदौर (मध्य प्रदेश)

'मीकू की शैतानी' पृष्ठ 32 का शेष....

दिन से मीकू की उपेक्षा कर रहा था। इसलिए मीकू को गुस्सा आया हुआ है। यह सब मीकू की शैतानी है। यह मुझसे गुस्सा है, अब तो मुझे इसे मनाना ही पड़ेगा।

अक्षज ने मीकू की ओर देखा और दोनों कान पकड़ते हुए सॉरी कहने लगा। मीकू ने अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया और डिश पर वैसे ही बैठा रहा। "मान भी जाओ दोस्त! अच्छा बाबा! अब से मैं तुम्हारे साथ फिर से खेलूँगा।" अक्षज ने एक बार फिर से कान पकड़े। अब मीकू के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। वह नीचे उतर कर अक्षज के पास आ गया। अक्षज ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा– "अच्छा! माफ कर दो यार!" दोनों फिर से पेड़ों के झुरमुट की ओर बढ़ चले।

शील कौशिक
सिरसा (हरियाणा)

मनुष्यों जैसा होता है : गोरिल्ला

क्या आप जानते हैं कि चिंपाजी और बोनोबास के बाद गोरिल्ला मनुष्यों के निकटतम रिश्तेदार हैं। गोरिल्ला का डीएनए मनुष्यों से 98.99 प्रतिशत मेल खाता है। यह वनमानुष परिवार का सबसे बड़ा सदस्य है। ये मध्य अफ्रीका में पाए जाते हैं। यद्यपि हिमयुग के समय गोरिल्ला की कई प्रजातियाँ थीं, लेकिन अब ये नष्ट हो चुकी हैं। आज मुख्यतः दो प्रजातियाँ हैं, माउंटेन गोरिल्ला तथा पश्चिमी गोरिल्ला। इनकी कई उप प्रजातियाँ हैं।

यद्यपि गोरिल्ला के पास इनसानों जैसी भाषा या बोली नहीं होती, लेकिन इनसानों की भांति भावनाएँ अवश्य होती हैं। वे हँस सकते हैं, रो सकते हैं। गोरिल्ला बुद्धिमान भी होते हैं। गोरिल्ला शाकाहारी होता है। पत्ते, फल, उपज आदि खाते हैं। एक विशेष प्रजाति के गोरिल्ले कीड़े भी खा लेते हैं। आश्चर्यजनक बात तो यह कि इन्हें बहुत कम पानी पीते देखा गया। सम्भवतः पानी की पूर्ति फलों और पत्तों में व्याप्त नमी से होती है।

अपनी ओर ध्यान खींचने का आसान तरीका है आवाज देकर बुलाना। लेकिन अपनी तरफ ध्यान खींचने के लिए गोरिल्ला क्या कर सकते हैं? अमेरिका के अटलांटा जू के गोरिल्ला 30 साल के दौरान जू–कीपर का ध्यान खींचने के लिए एक अलग आवाज निकालने का हुनर सीख चुके हैं। सुनने पर ये खांसी और छींक की आवाज जैसा लगता है। इस आवाज को 'स्नफ' नाम दिया है। 90 के दशक में कोको नाम की मादा गोरिल्ला ने इशारों के माध्यम से इनसानों से बात करना शुरू किया था। अब इससे एक कदम आगे जाकर गोरिल्ला एक विशेष तरह की आवाज निकालकर जू–कीपर्स का ध्यान अपनी तरफ खींच रहे हैं।

इस आवाज का उद्देश्य पहचानने के लिए जॉर्जिया विश्वविद्यालय की रोबर्टा सल्मी ने अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर एक प्रयोग किया। इसमें 8 गोरिल्ला को 3 स्थितियों में रखा गया। सबसे पहले जहाँ गोरिल्ला के सामने सिर्फ जू–कीपर मौजूद थे। दूसरी स्थिति, जिसमें उनके सामने केवल खाना था और तीसरी स्थिति में जू–कीपर के साथ खाना था। वो दोनों स्थितियाँ जिनमें जू–कीपर मौजूद थे, गोरिल्ला ने विशेष आवाज निकाली। जिससे ये साबित होता है कि ये आवाज वे जू–कीपर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए निकाल रहे हैं। शोध के दौरान अमेरिका सहित कनाड़ा के करीब 11 जू के 30 से ज्यादा गोरिल्ला इस तरह की आवाज निकालते देखे गए।

शोध में सामने आया कि गोरिल्ला इनसानी आवाजों को पहचानकर उनमें अंतर भी कर सकते हैं। यह शोध अटलांटा जू के वेस्टर्न गोरिल्ला पर हुआ। वेस्टर्न गोरिल्ला जानी–पहचानी और अजनबी आवाज के बीच अंतर कर पाने में सक्षम थे।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि गोरिल्ला भी घोंसले बनाते हैं। नवजात और छोटे बच्चे जमीन पर ही विश्राम करते हैं, लेकिन जब वे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो फिर अपने घोंसलों में रहने चले जाते हैं।

गोरिल्ला 10 से 13 वर्ष की आयु में परिपक्व जाते हैं। मादा गोरिल्ला ही अपने बच्चे की देखभाल करती है। शुरूआती कुछ महीने शिशु अपनी माँ के समीप ही रहते हैं तथा स्तनपान करते हैं। ढाई वर्ष की आयु में ये अपनी माँ का साथ छोड़ देते हैं तथा अलग घोंसले में सोने लगते हैं।

गोरिल्ला की आयु 35–40 वर्ष तक होती है, लेकिन चिड़ियाघर में इनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो सकती है। 17 जनवरी, 2017 को एक मादा गोरिल्ला की मौत 60 वर्ष की आयु में हुई थी। वह कोलंबस चिड़ियाघर और एक्वेरियम में रहती थी।

डॉ. अनुभा गुप्ता
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

अंडर 19 महिला क्रिकेट विश्व कप

भारत बना चैम्पियन

क्रिकेट का खेल आज सबसे लोकप्रिय खेल है और सबसे बड़ी बात यह है कि इस खेल में पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं को भी बराबर मौके मिल रहे हैं और वे अपना जलवा दिखा रही हैं। क्रिकेट शायद एकमात्र ऐसा खेल है जिसमें पुरुषों से पहले महिलाओं का विश्व कप आरंभ हो गया था।

आज टी–20 क्रिकेट सबसे लोकप्रिय क्रिकेट फार्मेट है। इस साल से महिलाओं के लिए अंडर–19 टी–20 क्रिकेट विश्वकप की भी शुरूआत की गई पहला टी–20 अंडर–19 क्रिकेट विश्व कप का आयोजन 14 जनवरी से 29 जनवरी 2023 तक साऊथ अफ्रीका में हुआ। इसमें कुल 16 टीमों ने भाग लिया, जिन्हें चार–चार के चार ग्रुप में बाँटा गया था। प्रत्येक ग्रुप से तीन–तीन टीमें अगले राउंड में पहुँचीं, जिसे सुपरसिक्स नाम दिया गया था। यहाँ फिर से दो ग्रुप बनाया गये।

इन दोनों ग्रुप में टॉप टू में रहने वाली टीमों को सेमीफाइनल में प्रवेश दिया गया। भारत के लिए यह अच्छा था कि भारत के दो जूनियर खिलाड़ी पिछले दो–तीन वर्षों से सीनियर टीम के लिए भी खेल रही थीं। उनके पास बहुत बढ़िया अनुभव था। भारतीय सीनियर टीम की ओपनर शेफाली वर्मा को बहुत ही विस्फोटक ओपनर माना जाता है। भारत ने उन्हें अपना कप्तान बनाया और एक मजबूत टीम भेजी। शेफाली वर्मा के अलावा भारतीय सीनियर टीम की रिचा घोष भी इस टीम में शामिल थीं।

भारत ने पूरे टूर्नामेंट में बहुत शानदार खेल दिखाया और एक को छोड़कर सारे मैचों में धमाकेदार जीत दर्ज की। उनकी एकमात्र हार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आई, अन्यथा अधिकतर मैचों में तो उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी को 100 रन तक भी नहीं पहुँचने दिया। ग्रुप मैचों में शानदार खेल दिखाते हुए भारत ने अपने तीनों मैच जीते। अगले राउंड में पहुँचने पर भारत को अपनी एकमात्र हार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मिली, फिर भी भारत ने अपने ग्रुप में टॉप किया। भारत के ग्रुप से भारत के अलावा ऑस्ट्रेलिया ने सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया।

ग्रुप टू से इंग्लैंड और न्यूजीलैंड की टीमें सेमीफाइनल में पहुँचीं। यहाँ सेमीफाइनल में भारत का मुकाबला न्यूजीलैंड से और ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला इंग्लैंड से हुआ। भारत ने अच्छा खेल कौशल दिखाया और न्यूजीलैंड को 20 ओवर में केवल 107 रन बनाने दिए। 15 ओवर में टारगेट को पूरा कर भारत की टीम शान से फाइनल में पहुँची।

दूसरा सेमीफाइनल बहुत रोमांचक रहा। इसमें पहले खेलते हुए इंग्लैंड की टीम केवल 99 रन पर आउट हो गई परन्तु उसने ऑस्ट्रेलिया को केवल 96 रन पर आउट कर दिया और 3 रन से मैच जीतकर फाइनल में पहुँची। दर्शकों को लगा कि फाइनल बहुत ही रोमांचक और शानदार होगा, परन्तु भारतीय खिलाड़ियों का मूड कुछ और ही था। शानदार गेंदबाजी करते हुए भारत की टीम ने इंग्लैंड को 68 रन पर आउट कर दिया। केवल 3 विकेट खोकर 14 ओवर में ही भारत ने इस मैच को जीत लिया ।

इस तरह अंडर–19 भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने भारत के लिए महिला वर्ग में पहला विश्व कप जीता। भारत का टूर्नामेंट में बहुत गौरवशाली प्रदर्शन रहा। **किसी भी टीम की तरफ से सर्वोच्च स्कोर 219 रन भारत की टीम ने ही बनाया। भारत की श्वेता सेहरावत ने टूनमिंट में सबसे ज्यादा 297 रन बनाए।**

इस तरह भारत के लिए नए साल की शुरूआत बहुत ही धमाकेदार रही। उम्मीद है कि इस साल भारत एक के बाद एक नई सफलताएँ अर्जित करेगा।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

होली की गुझिया

''मम्मी, एक गुझिया और दो न!'' नितिन जिद भरी आवाज में कह रहा था। ''नहीं, अब और नहीं। हम सबने एक–एक ही खाई है न। तुम पहले ही तीन गुझिया खा चुके हो। अब कल होली के दिन मिलेंगी और गुझिया।'' कहते हुए मम्मी ने गुझिया का डिब्बा फ्रिज में रख दिया। नितिन का मन और गुझिया खाने के लिए बहुत मचल रहा था। वह सोच ही रहा था कि मम्मी को एक बार फिर से गुझिया के लिए कहे कि तभी पापा कहने लगे– ''नितिन, एक साथ इतनी गुझिया खाना ठीक नहीं। तबीयत ख़राब हो सकती है और गुझिया कल खाना, अब कुल्ला कर लो जाकर।''

''कुल्ला करके मेरे कमरे में आ जाना। बातें करेंगे।'' दादा जी ने नितिन से कहा और ख़ुद भी कुल्ला करने के लिए कुर्सी से उठ खड़े हुए। मन मारकर जब नितिन कुर्सी से उठकर कमरे से बाहर जाने लगा तब भी उसकी नजरें फ्रिज की ओर ही थी। उसके चेहरे और हाव–भाव से यही लग रहा था कि और गुझिया खाने की इच्छा उसे बहुत सता रही है।

कुछ देर बाद वह दादा जी के कमरे में था, मगर आज दादा जी से उसने ज्यादा देर बातें नहीं की और न ही उनको कहानी सुनाने के लिए कहा। दस–पन्द्रह मिनट बाद ही नींद आने की बात कहकर वह दादा जी के कमरे से निकल आया और अपने कमरे में चला गया।

वैसे तो रात के समय बिस्तर पर लेटते ही उसे नींद आ जाया करती थी, पर आज उसे नींद नहीं आ रही थी। उसका सारा ध्यान गुझिया में ही अटका हुआ था। गुझिया इतनी अच्छी जो लगती थी उसे। कुछ देर तक तो नितिन अपने बिस्तर पर करवटें बदलता रहा, लेकिन फिर उससे रहा नहीं गया। वह चुपचाप उठा और दबे पाँव उस कमरे की ओर चल पड़ा जिसमें फ्रिज था। फ्रिज के पास पहुँचकर उसने आहिस्ता–से उसका दरवाजा खोला। गुझिया का डिब्बा सामने ही पड़ा था। अभी अपना हाथ उसने गुझिया के डिब्बे की तरफ बढ़ाया ही था कि बिजली चली गई। नितिन ने डिब्बे का ढक्कन हटाकर एक गुझिया उठाई और उसे खाने लगा, पर उसे गुझिया का स्वाद न आया। उसे लग रहा था जैसे वह गुझिया नहीं बल्कि कोई और चीज खा रहा हो।

लेकिन फिर भी वह डिब्बे से गुझिया निकाल–निकालकर गपागप खाता गया। चार गुझियाँ खाने के बाद उसका पेट भर गया। वह गुझिया के डिब्बे पर ढक्कन रखकर फ्रिज बन्द करने ही वाला था कि उसके मन में और गुझिया खाने का लालच आ गया। उसने दोनों हाथों में एक–एक गुझिया उठाई और मुट्ठी बन्द हाथों से डिब्बे पर ढक्कन रखकर फ्रिज का दरवाजा बन्द कर दिया। फिर धीरे–धीरे सम्भलते हुए दबे पाँव अपने कमरे की ओर चल पड़ा।

जैसे ही वह अपने कमरे में पहुँचा, तभी बिजली आ गई। रोशनी में उसने अपने हाथों में पकड़ी हुई गुझिया को देखा तो हैरान रह गया। उसके दोनों हाथों में एक–एक चीकू था। अब उसे समझ आया कि किस कारण उसे गुझिया का स्वाद और तरह का लग रहा था। वह मन मसोसकर रह गया। उसने दोनों चीकू मेज पर रख दिए और अपने बिस्तर पर जाकर सो गया।

अगली सुबह नींद खुलने के बाद भी झेंप के मारे वह देर तक बिस्तर में लेटा रहा। होली के कारण स्कूल की छुट्टी थी। मम्मी जब उसे जगाने आईं तो झेंप के कारण वह उनसे आँखें भी नहीं मिला पा रहा था। कुछ देर बाद जब नितिन नाश्ते की मेज पर पहुँचा तो पापा और दादा जी वहाँ पहले से ही मौजूद थे। उसे आया देख पापा ने रसोई में काम कर रही मम्मी को आवाज देकर कहा– ''आज तो होली का दिन है। सबसे पहले मुँह मीठा किया जाना चाहिए। जरा गुझिया का डिब्बा तो लाना।''

मम्मी फ्रिज में से गुझिया का डिब्बा निकालकर ले आईं। फिर ढक्कन हटाए बिना उन्होंने डिब्बा नितिन के सामने कर दिया। तभी दादा जी कहने लगे– ''लो बेटा, पहले तुम खाओ।'' मगर झेंप के मारे नितिन नजरें झुकाकर बैठा रहा और उसने डिब्बे की तरफ देखा भी नहीं। उसे लग रहा था कि डिब्बे में चीकू ही पड़े होंगे और उसका मजाक बनेगा। वह सिर झुकाए बस चुपचाप बैठा रहा। तभी मम्मी हँसते हुए कहने लगी– ''ले लो बेटू, ये गुझिया ही हैं, चीकू नहीं।'' मम्मी की इस बात पर दादा जी और पापा भी हँसने लगे। ''कैसे थे रात वाले चीकू मतलब रात वाली गुझिया?'' पापा ने हँसते–हँसते पूछा। शर्म के मारे नितिन कोई जवाब न दे पाया। उसने अपना सिर और नीचे झुका लिया।

''रात को जब तुम खाना खाकर दादा जी के कमरे में जाने के लिए उठे थे, तभी तुम्हारे हाव–भाव से हमें पता लग गया था कि तुम रात को गुझिया खाए बगैर रह नहीं पाओगे। ज्यादा गुझिया खाने से तुम्हारी तबीयत ख़राब न हो जाए, इसलिए हमने यह योजना बनाई थी कि गुझिया वाले डिब्बे में चीकू रख दिए थे और गुझियाँ निकालकर चीकू के डिब्बे में रख दी थीं।'' मम्मी विस्तार से बताने लगी।

''मगर चीकू में कोई गुठली तो थी ही नहीं।'' अचानक नितिन के मुँह से निकल पड़ा। ''यह सब तुम्हारी मम्मी की करामात थी। गुझिया वाले डिब्बे में चीकू रखने से पहले चीकू के अन्दर चाकू डालकर बड़ी सफाई से उनकी गुठलियाँ निकाल ली थी तुम्हारी मम्मी ने।'' पापा ने बताया।

''और वो जो बिजली चली गई थी और फिर आ गई थी, वह तुम्हारे पापा की करामात थी।'' दादा जी ने हँसते हुए कहा। ''चलो अब तुम भी अपनी करामात दिखाओ और ये गुझिया खाओ।'' मम्मी ने गुझिया के डिब्बे से ढक्कन हटाकर नितिन की ओर ले जाते हुए कहा।

नितिन ने देखा डिब्बे में गुझियाँ ही थीं, चीकू नहीं थे। ''देख लिया न, ये गुझियाँ ही हैं, असली वाली गुझिया। होली की गुझिया।'' पापा ने कहा तो सब हँसने लगे मगर नितिन को अफसोस हो रहा था कि वह खुद पर नियन्त्रण क्यों नहीं रख पाया ?

हरीश कुमार 'अमित'
गुरुग्राम (हरियाणा)

चित्र पहेली

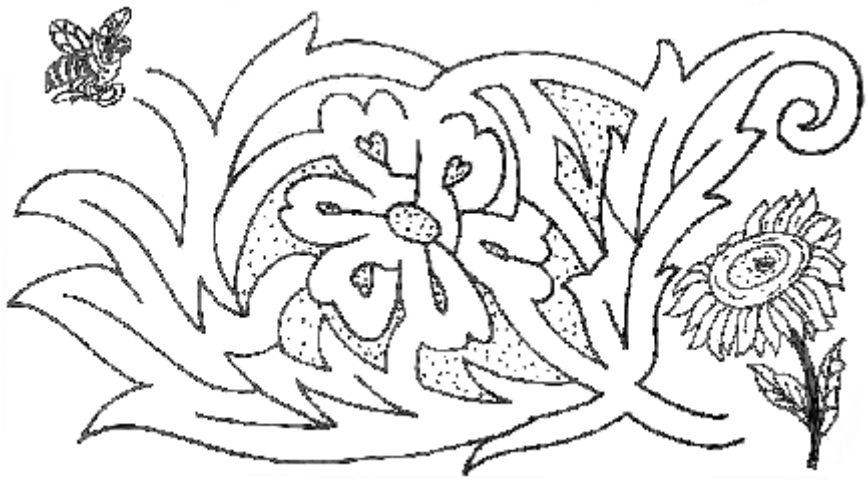

रानी मधुमक्खी को सही रास्ते से फूल के पास पहुँचाओ।

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. मुन्नू के मन की पीड़ा क्या है?
2. गाँव पटवा टोली किस बात के लिए प्रसिद्ध है?
3. 'विनम्रता और मृदुल व्यवहार से बिगड़े हुए काम भी..... .. जाते हैं।' रिक्त स्थान भरो।
4. भविष्य में ताले का स्वरूप क्या होगा ?
5. मोबाइल टावर के पास आने पर तितली को कैसा महसूस हुआ ?
6. मटकू बौने ने इनाम की राशि का क्या उपयोग किया ?
7. जल चक्र किसे कहते हैं? नाटिका में इसे कौन समझाता है?
8. जूही का पढ़ाई में मन कैसे लगा ?
9. गोरिल्ला व मनुष्य के डीएनए में कितने प्रतिशत समानता है ?
10. होली की गुझिया कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) हरियाणा (ब) झारखंड (स) उड़ीसा (द) अरुणाचल प्रदेश (2) 28 राज्य, 8 केन्द्र शासित प्रदेश (3) सुन्दर वन प.बंगाल (4) तिरुवनन्तपुरम् (5) उत्तर प्रदेश (6) तमिलनाडु (7) अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम (8) बड़ा राजस्थान, छोटा गोवा (9) उत्तराखंड (10) आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना

अन्तर ढूँढ़िए

(1) HAPPY BIRTHDAY में T का रंग अलग (2) गिफ्ट का आकार बड़ा (3) केक से एक मोमबत्ती गायब (4) लड़की के बालों का रंग अलग (5) गुब्बारा अतिरिक्त (6) एक गिलास गायब (7) कुत्ते का बच्चा अतिरिक्त (8) आइसक्रीम का आकार छोटा

दिमागी कसरत

(1) Rich x Poor (2) Wet x Dry (3) Buy x Sell (4) Short x Tall (5) War x Peace (6) Front x Back (7) End x Begin (8) Loss x Gain (9) Most x Least (10) Weak x Strong

बूझो तो जानें

(1) सूरज (2) हवा (3) कलम (4) पेड़ (5) साइकिल

वर्ग पहेली

1 रा	2 के	3 श	■	4 चे	5 ता	व	6 नी
7 म	श	क	■	8 टी	ला	■	र
9 न	व	■	10 पं	च	■	11 अ	■
व	■	12 अ	ख	ण्ड	■	13 वि	14 प्र
15 मी	16 ना	र	■	■	17 व	रा	ह
■	18 ग	ज	19 रा	■	20 क	म	ला
21 बू	रा	■	22 ज	म्मू	■	■	द
23 रा	ज	स्था	न	■	24 आ	ज	■

सुडोकू

7	6	1	3	4	9	8	2	5
3	8	2	7	5	1	6	9	4
5	9	4	2	8	6	7	3	1
6	2	5	9	7	3	4	1	8
8	3	7	6	1	4	9	5	2
4	1	9	5	2	8	3	7	6
9	4	3	1	6	5	2	8	7
2	5	8	4	9	7	1	6	3
1	7	6	8	3	2	5	4	9

आयशा लोहिया, कक्षा 6, राजसमन्द

माँ

माँ, अम्मी, ईजा, आई,
इन सभी पर्यायों में मानो
पूरी सृष्टि समाई।

जगत में झूठ, फरेब
सब धोखा और माया है,
एकमात्र उसके आँचल में
मिलती शीतल छाया है।

ओझल हो जाऊँ
नजरों से उसकी
वो राह ताकती रहती है,
खुद बीमार होकर भी
सबका ध्यान धरती है।

क्या अरमान, क्या ख्वाब
उसकी तो पूरी दुनिया
हम में बसती है।।

बड़े होते–होते भूलो मत
जिस उम्र की नाव पर
हम सवार हैं,
वहीं उसकी भी कश्ती है।

प्रत्यंचा शौनक, कक्षा 6, केकड़ी (राज.)

रिया रस्तोगी, कक्षा 6, डूटीमा

अक्षय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाने

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 4, चित्तौड़गढ़

अर्चिता तातेड़, कक्षा 6, कोलकाता

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस

हँसना, मुस्कुराना प्रसन्नचित्त रहना । प्रसन्नता दिवस का यही है कहना ।।

खुशी

खुशबू मीणा

गीता

माया कुमारी

नेहा

आशा कुमारी

चंचल

अनीता मीणा

रवीना

सुमन

गायत्री साहू

रोशन

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- प्रतापगढ़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

कम लागत वाली हाइब्रिड साइकिल, जीरो उत्सर्जन

तमिलनाडु में कोयम्बटूर के गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी के विद्यार्थियों ने जीरो साइकिल विकसित की है। यह कम लागत वाला हाइब्रिड वाहन है, जिसमें शून्य उत्सर्जन और शून्य ग्रिड बिजली की खपत होती है। इसमें एक शक्तिशाली ऊर्जा स्रोत ओवरहेड हैं। बैटरी बैकअप और सौर विकिरण के आधार पर विस्तारित रेंज का उपयोग करके कोई भी व्यक्ति साइकिल पर 15 किलोमीटर तक की सवारी आसानी से कर सकता है।

भारत की बेटियाँ बनी पहली बार विश्व चैम्पियन

क्रिकेट जगत पर अपनी छाप छोड़ते हुए पहले आइसीसी विमेंस अंडर-19 टी-20 विश्व कप जीत लिया। फाइनल में भारतीय टीम ने इंग्लैंड को 36 गेंद शेष रहते सात विकेट से करारी शिकस्त दी और विश्व चैम्पियन बनने का गौरव हासिल किया। यह जीत इसलिए भी खास है, क्योंकि यह महिला क्रिकेट में भारत की पहली आइसीसी ट्रॉफी है।

दुनिया की सबसे छोटी लेखिका की दूसरी किताब प्रकाशित

इंग्लैंड के वेमाउथ की 6 साल की बेला डे डार्क बुक सीरीज प्रकाशित करने वाली सबसे कम उम्र की लेखिका बन गई है। बेला की पहली किताब पाँच साल की उम्र में प्रकाशित हो गई थी। उनकी दूसरी किताब का नाम 'स्नोईज बर्थडे पार्टी' है। बेला के नाम पहली किताब 'द लॉस्ट केट' की 2000 प्रतियाँ बिकने का गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड भी है।

परमवीर चक्र विजेताओं के नाम

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अंडमान निकोबार द्वीप समूह के 21 द्वीपों का नामकरण 21 परमवीर चक्र विजेताओं के नाम पर करते हुए कहा कि पहले इन द्वीपों पर गुलामी की छाप थी। पराक्रम दिवस के रूप में मनाई जा रही नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर अंडमान निकोबार द्वीप समूह में इनके नए नामकरण से नया इतिहास लिखा जा रहा है।

भारतीय मूल की नताशा फिर दुनिया की सबसे मेधावी छात्रा

अमरीका के जॉन हॉपकिंस सेंटर फॉर टेलेंटेड यूथ ने 76 देशों के 15,000 छात्र-छात्राओं को ग्रेड स्तर की परीक्षा के नतीजों के आधार पर भारतीय मूल की नताशा पेरियानायगम को लगातार दूसरे साल दुनिया की सबसे मेधावी छात्रा घोषित किया है। नताशा न्यूजर्सी में फ्लोरेंस एम गॉडिनीयर मिडिल स्कूल की छात्रा है। मौखिक एवं मात्रात्मक योग्यता की परीक्षा में नताशा का प्रदर्शन ग्रेड आठ में 90 पर्सेंटाइल हासिल करने के बराबर था।

महिला सरपंच की पहल अपनी जमीन दान की

नवगठित ग्राम पंचायत खींवसर (झुंझनूं) में बिमला देवी गाँव की पहली सरपंच के रूप में चुनी गई। ग्राम पंचायत नई होने के कारण यहाँ कोई भवन नहीं था। गाँव में पंचायत भवन बनाने के लिए जगह नहीं मिली तो महिला सरपंच ने खुद अपनी 40 लाख की जमीन दान कर दी। दान किए गए भूखण्ड पर पंचायन भवन बनकर तैयार हो गया है।

Meet the Birds

My name is swan. I am a bird but I can swim in water.

I am a parrot. I am green in colour and have a red beak.

I am a Kingfisher. My favorite food is fish.

I am a woodpecker. With my strong beak I make hole in the tree for nesting.

My name is Peacock. I have big colourful feathers and I am the National Bird of India.

जन्मदिन की बधाई

01 मार्च

आलिया चौहान
बीकानेर

02 मार्च

वेधांशी जैन
सिलीगुड़ी

05 मार्च

अमित कुमार
बीकानेर

08 मार्च

रिद्धि छाजेड़
बेहरामपुर

17 मार्च

खुशी कौशिक
बीकानेर

29 मार्च

कार्तिक जैन
दिल्ली

मम्मी झूठ नहीं बोलती

शेखू और करीमा दोनों जुड़वाँ भाई–बहन थे। जिसमें शेखू बड़ा था और करीमा छोटी थी। जब वह दोनों साढ़े तीन साल के हो गए तो उनके पापा ने उन्हें घर से थोड़ी दूर स्थित एक पब्लिक स्कूल में एडमिशन करा दिया और उन्हें स्कूल की बस लाया, ले जाया करती थी।

स्कूल खुलने का समय 7:00 बजे था। इसलिए शेखू और करीमा को सुबह 6:30 बजे तैयार करा कर उनकी मम्मी जैनब उन्हें स्कूल बस तक छोड़ आती। दोपहर के 1:00 बजते –बजते हुए दोनों बच्चे वापस घर आ जाते। उनके पापा 9:00 बजे ऑफिस के लिए मोटरसाइकिल से निकल जाते और शाम को घर वापस आते।

एक दिन स्कूल से आने के बाद शेखू दौड़ता हुआ अपनी मम्मी के पास गया और आँखें फैलाकर बोला– "मम्मी! आपको मालूम है, आज पापा चौराहे पर सिगरेट पी रहे थे।'' यह सुनते ही जैनब सन्न रह गई। वह कुछ देर खामोश रही फिर बोली– "कौन कह रहा था तुमसे?" शेखू ने जवाब दिया। "मम्मी, हमारी स्कूल बस वाले भैया जी कहे थे कि तुम्हारे पापा अभी चौराहे पर खड़े सिगरेट पी रहे थे।" जैनब ने कुछ सोचा और शेखू को गले लगाते हुए कहा– "बेटा, बस वाले भैया जी तुम्हारे पापा को पहचान नहीं पाये होंगे। क्योंकि तुम्हारे पापा कभी सिगरेट नहीं पीते।" शेखू ये सुनकर खुश होकर अपने मित्रों के साथ खेलने चला गया।

शाम को जब शेखू के पापा घर आ गए तो उनके कुछ देर आराम करने के बाद जैनब ने उनसे पूछा– "आज आपने सिगरेट पी थी क्या?" शेखू के पापा एकाएक चौंक गए– "क्यों? क्या हुआ?" वह बोले। "मैं जो पूछ रही हूँ वह सही है क्या?" अब जैनब ने थोड़ा असहज होकर पूछा। "हाँ, आज ऑफिस जाते समय चौराहे पर एक सहकर्मी मिल गया था। वह छुट्टी पर है आजकल। उसके भाई की शादी है। उसी ने रोककर दफ्तर के हाल–चाल पूछे और मेरे सामने सिगरेट बढ़ा दी। मैं संकोचवश उसे मना न कर सका और मैंने सिगरेट ले ली। क्यों कुछ हुआ क्या?" शेखू के पापा ने पूछा।

"हाँ, आज बच्चों के स्कूल का हॉफ डे था, बच्चों की स्कूल बस जब चौराहे पर से गुजर रही थी तभी स्कूल बस के भैया जी ने आपको सिगरेट पीते देख लिया था। वह तो आपको जानता है ना? इसलिए उसने शेखू से कहा कि चौराहे पर तुम्हारे पापा सिगरेट पी रहे हैं।" शेखू के पापा यह सुनकर खामोश हो गए।

जैनब ने फिर कहना शुरू किया– "लेकिन मैंने शेखू से साफ–साफ कह दिया कि तुम्हारा पापा कभी सिगरेट नहीं पीते, बस वाले भैया जी को पहचानने में भूल हुई है। अब आप कभी सिगरेट मत पीना चाहे कोई कितना भी आग्रह करे वरना मैं बच्चों की नजर में सदैव के लिए झूठी हो जाऊँगी।" जैनब की इन भावुकता भरी बातों को सुनकर शेखू के पापा द्रवित हो उठे।

उन्होंने मन ही मन में यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब वह किसी के आग्रह पर भी सिगरेट को हाथ नहीं लगाएँगे और यह बात सोचते हुए उन्होंने जैनब को गले से लगा लिया और निर्णायक स्वर में कहा "ठीक है"।

शराफ़त अली ख़ान
बरेली (उत्तरप्रदेश)

किड्स कॉर्नर

– वेणु वरियाथ

Picture Crossword

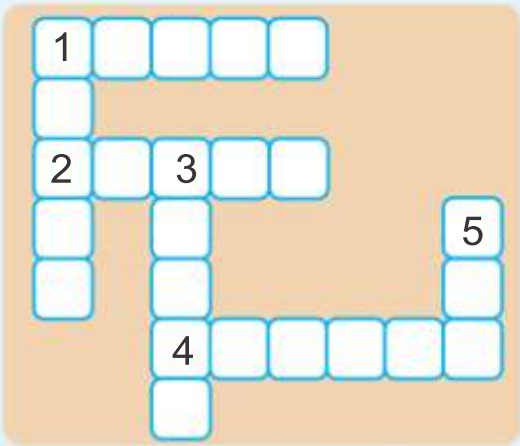

Across

Down

Correct Word

Look at each picture. Then draw a circle around the correct word in each row.

owl parrot crow

cake box drum

seahorse horse dolphin

bear deer fox

Pencil Work

व्यक्ति का चेहरा सुन्दर हो या न हो,
जीवन सुन्दर होना चाहिए।
आन्तरिक सौंदर्य चेहरे की कुरूपता को भी ढक देता है।
आन्तरिक सौंदर्य का सच्चा आभूषण त्याग है।
- आचार्य तुलसी

With Best Compliments from :-

H.M. Sethia

Manoj Sethia

K.J. SETHIA & CO.

FOOD GRAINS, POTATO, ONION MERCHANTS
& COMMISSION AGENT

H.B. ROAD, FANCY BAZAR, GUWAHATI-781001 (ASSAM)
M : 94351 12343, 98640 21444 ❖ PH : 0361-2543362, 2543465

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का क्लब

विधा : ड्राइंग विषय : समुद्री जीवन

आप भी इस क्लब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखकर व्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता निःशुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।

वेधांशी जैन, कक्षा 6, सिलिगुड़ी

दृष्टि शर्मा, कक्षा 8, बीकानेर

कीर्ति गोयल, कक्षा 5, सिलीगुड़ी

ओजस्वी, कक्षा 5, गौरीगंज

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाने

अर्चित जैन, कक्षा 7, उदयपुर

अक्षय, कक्षा 8, बीकानेर

मार्च, 2023

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

जमशेदजी टाटा

जन्म : 18 मार्च, 1839 ■ निधन : 19 मई, 1904

भारत के महान उद्योगपति तथा विश्वप्रसिद्ध औद्योगिक घराने टाटा समूह के संस्थापक का जन्म गुजरात के नवसारी में हुआ था। कर्मठ, कार्यकुशल, विश्वसनीय उद्योगपति एवं उदारमना व्यक्तित्व के धनी जमशेदजी ने वस्त्र उद्योग, विद्युत उत्पादन एवं पर्यटन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने होटल ताज का निर्माण करवाया। उनका मानना था कि आर्थिक स्वतन्त्रता ही राजनीतिक स्वतन्त्रता का आधार है।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक